

नये नियम का इतिहास, साहित्य और धर्मशास्त्र

सत्र 9: मरकुस का परिचय

डॉ. टेड हिल्लेब्रांट द्वारा

यह डॉ. टेड हिल्लेब्रांट द्वारा न्यू टेस्टामेंट इतिहास, साहित्य और धर्मशास्त्र पाठ्यक्रम में दिया गया व्याख्यान है। व्याख्यान संख्या 9. मैथ्यू की पुस्तक का समापन और मार्क के व्यक्तित्व पर परिचय की शुरुआत।

A. मैथ्यू की समीक्षा [00:00-3:46]

ए: एसी को मिलाएं; 00:00-12:00; मैथ्यू हिब्रू भाग 1 के रूप में

नए नियम के इतिहास, साहित्य और धर्मशास्त्र पाठ्यक्रम में आपका स्वागत है। यह मैथ्यू की पुस्तक पर हमारी तीसरी प्रस्तुति है और आज हम मैथ्यू की कहानी समाप्त करेंगे। बस थोड़ा सा समीक्षा करने के लिए कि हम कहाँ तक पहुँचे हैं। हमने मैथ्यू के बारे में बात की कि वह व्यवस्थित है। हमने मैथ्यू और ल्यूक के बीच अंतर-पाठीय संबंधों के बारे में बात की, ल्यूक ने जो कुछ भी बिखरा दिया है उसे इकट्ठा किया। हमने कहा कि मार्क यीशु के चमत्कारों और यीशु के कार्यों का विस्तार करता है जबकि मैथ्यू यीशु के शब्दों का विस्तार करता है। फिर हमने जेम्स और मैथ्यू के बीच थोड़ी तुलना की क्योंकि मैथ्यू व्यवस्थित है और जेम्स का मैथ्यू के साथ एक अंतर-पाठीय संबंध है। हमने प्रेरित और शिष्यत्व, शिष्यत्व की कीमत के बारे में बात की। हमने धार्मिकता, आज्ञाकारिता, सच्चे और झूठे शिष्यों के बारे में बात की जो मैथ्यू की पुस्तक में चित्रित किए गए हैं। फिर हमने मसीह के धर्मशास्त्र, उनके देवता, उनकी मानवता, मैथ्यू की पुस्तक में राजा के रूप में मसीह और मसीह के राजत्व पर जोर देने के बारे में बात की। हमने समय के बारे में बात की: अतीत, वर्तमान और भविष्य। हमने कहा कि मैथ्यू को संभवतः यहूदी समुदाय के लिए लिखा गया था, और इसलिए वह पुराने नियम के संदर्भों का 40 से अधिक बार उल्लेख करता है। पुराने नियम को पूरा करने वाले सभी विभिन्न प्रकार के संदर्भ, लेकिन पूर्तियाँ सभी प्रकार के तरीकों से

आती हैं: प्रत्यक्ष पूर्ति से लेकर प्रतिध्वनि तक जहाँ यह पवित्रशास्त्र के माध्यम से प्रतिध्वनित होती है और मैथ्यू की पुस्तक के माध्यम से प्रतिध्वनित होती है। पुराने नियम की पूर्ति के विभिन्न तरीके, पूर्वाभास, पूर्वाभास। वह अतीत था। वर्तमान में उनके पाँच प्रमुख प्रवचन होंगे जिनके बारे में हमने बात की: पर्वत पर उपदेश, बारह का भेजा जाना, राज्य के दृष्टांत, अध्याय 18 में चर्च प्रवचन, और अध्याय 24 और 25 में जैतून का प्रवचन। और फिर भविष्य, हमने जैतून के प्रवचन और आने वाले राज्य, और "पहले से ही लेकिन अभी तक नहीं," "यहाँ लेकिन वहाँ," भविष्य में आने वाले राज्य को देखा।

आज हम पुस्तक के हिब्रू अभिविन्यास पर नज़र डालना चाहते हैं। हमने कहा कि यह संभवतः यहूदी लोगों के लिए लिखी गई थी, और इसलिए हम कहना चाहते हैं: पाठक कौन हैं, इसके संकेत क्या हैं? यहाँ बहुत सी पुस्तकों में, मेरी सामान्य कार्यप्रणाली लेखक के साथ काम करना है - और मैं जानता हूँ कि कुछ नए नियम के लोग लेखकत्व को कम महत्व देते हैं - लेकिन मैं लेखकों से निपटना चाहता हूँ, खासकर जब हम मार्क की पुस्तक में आते हैं। हम तब पाठकों के बारे में भी पूछना चाहते हैं - लेखक और श्रोता। किस प्रकार की समस्याएँ, किस प्रकार की चीज़ों ने इस सुसमाचार या इस पत्र को लिखने की प्रेरणा दी, लेखक और उस पाठक के बीच? इसलिए हम इसके हिब्रू अभिविन्यास के बारे में बात करने जा रहे हैं, हम इस बारे में बात करने जा रहे हैं कि हिब्रू अभिविन्यास क्यों है। ऐसा लगता है कि इसका एक गैर-यहूदी पहलू है, जिसे वास्तव में मैथ्यू की पुस्तक में आगे बढ़ाया गया है। इसलिए हम उस विषय को भी उठाएँगे। फिर मैथ्यू की पुस्तक में भव्य विषय, शुरुआत और अंत, पूरी दुनिया में गवाही देना। अंत में, हम शैली पर कुछ बातें उठाएँगे। एक बात है जिसे मैं शैली के संदर्भ में उजागर करना चाहता हूँ, और हम बाद में अतिशयोक्ति के संदर्भ में उस पर बात करेंगे।

B. मत्ती का इब्रानीपन—भाषा [3:46-7:40]

हम हिब्रू पृष्ठभूमि या हिब्रू दर्शकों, मैथ्यू की पुस्तक के यहूदी दर्शकों को स्थापित करने की कोशिश कर रहे हैं। जिन चीज़ों के बारे में हमने पहले बात की थी, उनमें से एक है

जिसे गेमाट्रिया सिद्धांत कहा जाता है। मैथ्यू में आपके पास यीशु मसीह की वंशावली है, यीशु मसीह दाऊद के पुत्र, अब्राहम के पुत्र। तो आप देख सकते हैं कि यह यीशु से दाऊद तक कैसे पहुँचता है, जो लगभग 1000 ईसा पूर्व है, अब्राहम तक, जो लगभग 2000 ईसा पूर्व है। तो यह चलता है, यीशु मसीह दाऊद के पुत्र, 1000 ईसा पूर्व, अब्राहम के पुत्र, 2000 ईसा पूर्व। फिर दाऊद और अब्राहम दोनों के साथ हमारे पास यह महान दाऊदी वाचा है जहाँ दाऊद इस्राएल का राजा है (2 शमूएल 7 में), दाऊद और उसके वंशज के बारे में यह महान वादा है। दाऊद परमेश्वर के दिल के अनुसार एक व्यक्ति था। तब परमेश्वर ने कहा "दाऊद, मैं तुम्हारे लिए एक घर बनाने जा रहा हूँ" और इसका मतलब था कि वह उसके लिए एक राजवंश बनाने जा रहा था और दाऊद के वंशजों में से एक हमेशा के लिए इस्राएल के सिंहासन पर बैठेगा। और वह 2 शमूएल 7 है जब दाऊद मंदिर बनाना चाहता था। फिर अब्राहम के साथ आपके पास महान अब्राहमिक वाचा, भूमि, वंश है, और वह सभी राष्ट्रों के लिए एक आशीर्वाद होगा। तो आप मैथ्यू की पुस्तक में जो देखते हैं वह अब्राहमिक वाचा की पूर्ति है क्योंकि सुसमाचार सभी राष्ट्रों में फैलता है। तो डेविड और अब्राहम प्रमुख व्यक्ति हैं। इस तरह से पुस्तक शुरू होती है, दोनों प्रमुख यहूदी खिलाड़ी। अब मैथ्यू 1 में यीशु मसीह की वंशावली में गेमाट्रिया, अब्राहम से डेविड तक चौदह पीढ़ियों तक जाती है, डेविड से पीढ़ी से पीढ़ी तक 586 ईसा पूर्व में बेबीलोन में निर्वासन तक चौदह पीढ़ियाँ। और फिर बेबीलोन में निर्वासन और यीशु के जन्म के बीच चौदह पीढ़ियाँ हैं। लेकिन जब आप वास्तव में इसे देखते हैं, और आप अध्याय 1 श्लोक 8 को देखते हैं, तो आप पाते हैं कि मैथ्यू ने वास्तव में यहूदा के तीन राजाओं को छोड़ दिया है। राजाओं की पुस्तक में यहूदा के राजाओं की एक सूची है, हम जानते हैं कि कौन किसके बाद आता है। तो हमारे पास राजाओं की पूरी सूची है, और हम जानते हैं कि हमने जिन तीन नामों को छोड़ दिया है। यदि आप 1 इतिहास पर जाते हैं, तो आप इतिहास से समानांतर मार्ग की तुलना मैथ्यू 1:8 से कर सकते हैं। इसलिए वह इसे काम करने और इसे चौदह में फिट करने के लिए ऐसा करता है। हमने कहा कि प्राचीन समय में, वे वर्णमाला को अपनी संख्या प्रणाली के रूप में उपयोग करते हैं, जबकि अंग्रेजी में हमारे पास एक अलग वर्णमाला और एक अलग संख्या प्रणाली है (1, 2, 3

और हमारे पास ए, बी, सी दो अलग-अलग प्रणालियाँ हैं)। उन्होंने अपनी वर्णमाला का उपयोग इस तरह किया कि ए 1 होगा, बी 2 होगा, सी 3 होगा, डी 4 होगा। और यदि आप हिब्रू में ऐसा करते हैं, तो यह पता चलता है कि यह संख्या चौदह डीवीडी के लिए अच्छी तरह से खड़ी हो सकती है। डी संख्या 4 है, वी संख्या 6 है, डी संख्या 4 है। यदि आप इन्हें एक साथ रखते हैं, तो डीवीडी संख्या 14 है। इसलिए यह सुझाव दिया गया है, संख्याओं और अक्षरों के साथ काम करने वाले इस गेमेट्रिया सिद्धांत के माध्यम से, कि मैथ्यू यीशु मसीह को कहने की कोशिश कर रहा है: अब्राहम से डेविड तक चौदह पीढ़ियाँ, डेविड से निर्वासन तक चौदह, निर्वासन से यीशु तक चौदह, कि यीशु मसीह डेविड का पुत्र है, उस सिद्धांत पर काम करते हुए। फिर से, यदि आप यहूदी नहीं होते, तो आप डीवीडी को नहीं जानते। डीवीडी, हमने कहा कि यहूदी स्वरों को नहीं डाल रहे थे, इसलिए आपके पास केवल व्यंजन हैं, इसलिए इसकी डीवीडी है। अब मैथ्यू की पुस्तक में भी, वह "एलोई, एलोई, लामा सबाचतनाई" करता है "मेरे भगवान, मेरे भगवान, आपने मुझे क्यों छोड़ दिया?" उसके पास अरामी में है। वह "देखो" शब्द का बहुत उपयोग करता है, जो हिब्रू शब्द *हिनेह* है।

सी. इब्रानीपन - भविष्यवाणी की पूर्ति और विशिष्ट यहूदी संदेश

[7:40-12:00]

वह भविष्यवाणी की पूर्ति के मूल भाव का भी उपयोग करता है। जब हम समय के बारे में बात कर रहे थे, और मैथ्यू द्वारा पुराने नियम को उद्धृत करने के बारे में बात कर रहे थे, तो हमने इस पर पहले ही विचार कर लिया था। उदाहरण के लिए, मैथ्यू अध्याय 1 में, यीशु मसीह का जन्म *पार्थेनोस में कुंवारी से हुआ*। मैरी कुंवारी है; यूसुफ उलझन में है कि क्या करना है। फिर यह यशायाह अध्याय 7 से उस अंश को उद्धृत करता है: "देखो कुंवारी गर्भवती होगी और बच्चे को जन्म देगी।" तो फिर आपको यशायाह अध्याय 7 में जो कुछ हो रहा है, उसके साथ यीशु और कुंवारी के गर्भधारण के बीच यह संबंध मिलता है। मीका और बेथलेहम के बीच यह संबंध, कि वह यहूदिया के बेथलेहम में पैदा होगा। इसलिए वे

बेथलेहम में चले गए और जिस स्थान पर वे रह रहे थे, वहाँ उनके लिए जगह नहीं थी, संभवतः बेथलेहम में रिश्तेदारों के साथ।

"वे मिस्र में चले गए" और हमने कहा कि यह होशे 11 से था। यह थोड़ा अलग था "मैंने अपने बेटे को मिस्र से बुलाया।" और वहाँ आपको यीशु एक नए इस्राएल के रूप में मिलते हैं। हमने कहा, मैथ्यू की पुस्तक, यीशु को एक नए मूसा के रूप में चित्रित करती है। तो यह दोनों - यह नया इस्राएल की बात, "मैंने अपने बेटे को मिस्र से बुलाया" क्योंकि यूसुफ और मरियम मिस्र में जाते हैं और जब वे वापस आते हैं, तो वे संदर्भ भी यीशु को इस्राएल से जोड़ते हैं। यीशु नया इस्राएल है, यीशु नया मूसा है, और पाँच प्रवचन देता है। तो पुराने नियम का उपयोग उन संकेतकों में से एक है कि यह एक बहुत ही यहूदी जुड़ी हुई पुस्तक है। मैथ्यू 5:17, यीशु ने कहा, "मैं भविष्यद्वक्ताओं के कानून को नष्ट करने के लिए नहीं आया था, बल्कि उन्हें पूरा करने के लिए आया था।" तो आपको यीशु को चरमोत्कर्ष के रूप में, भविष्यद्वक्ताओं के कानून की नियति की पूर्ति के रूप में मिलता है।

अब, मुझे लगता है कि मैथ्यू के यहूदीपन और यहूदी मिशन की विशिष्टता के संदर्भ में कुछ दिलचस्प बातें हैं, जब यीशु मैथ्यू अध्याय 10 में बारह लोगों को भेजते हैं, तो वे शिष्यों को भेजते हैं, और वे शिष्यों को स्पष्ट निर्देश देते हैं। यही वे कहते हैं, और केवल मैथ्यू में ही ये निर्देश हैं। मैथ्यू अध्याय 10:5 में और उसके बाद शिष्यों को भेजते समय वे कहते हैं, "अन्यजातियों के बीच कहीं मत जाओ, और सामरियों के किसी शहर में प्रवेश मत करो।" यीशु उनसे कहते हैं, "अन्यजातियों के पास मत जाओ, सामरियों के पास मत जाओ, बल्कि इस्राएल के घराने की खोई हुई भेड़ों के पास जाओ।" इसलिए, जब यीशु अपने शिष्यों को भेजते हैं, तो वे उनसे कहते हैं, "नहीं, तुम इस समय पूरी दुनिया में मत जाओ, तुम केवल इस्राएल के घराने में जाओ, सामरियों या अन्यजातियों के पास भी नहीं, केवल इस्राएल की खोई हुई भेड़ों पर ध्यान केंद्रित करो।" इसलिए एक अर्थ में, इस्राएल को पहले अधिकार मिलता है - सुसमाचार संदेश पहले उनके पास आता है। फिर हम यहूदी समुदाय से बड़े पैमाने पर अस्वीकृति देखेंगे, और फिर अस्वीकृति के बाद, सुसमाचार सामरियों तक

पहुँचता है। तो, यह एक बहुत ही दिलचस्प, विशिष्ट कथन है, केवल यहूदी लोगों के लिए जब वह बारह को भेजता है।

यहाँ एक और दिलचस्प बात सामने आई, वह है सीरो-फोनीशिया की महिला, या कनानी महिला। वह यीशु के पास आती है और चाहती है कि यीशु उसकी बेटी को सीरो-फोनीशिया में ठीक करें, जो कि इस्राएल के ठीक उत्तर में लेबनान का इलाका है। यीशु उससे कहते हैं, “मुझे सिर्फ इस्राएल की खोई हुई भेड़ों के पास भेजा गया था।” वे कहते हैं कि बच्चों का खाना कुत्तों को खिलाना सही नहीं है। महिला आगे आती है और कहती है, “अच्छा, कुत्ते भी मेज़ के नीचे रखे खाने से खाते हैं।” यह मत्ती अध्याय 15:24 से है। तो यह महिला वापस आती है और यीशु कहते हैं, “वाह, मैंने इस्राएल में ऐसा विश्वास नहीं देखा।” वे कहते हैं, “जाओ, तुम्हारा बच्चा ठीक हो गया है।” लेकिन यीशु पहले हिचकिचाहट दिखाते हुए कहते हैं, “मुझे सिर्फ इस्राएल की खोई हुई भेड़ों के पास भेजा गया था।” फिर वह उस तरह से जवाब देती है। आपको इस तरह के खास यहूदी बयान मिलते हैं, दोनों कनानी महिला के साथ और बारह को भेजे जाने के साथ, जो यह संकेत देता है कि यहाँ यहूदी दर्शकों को हाइलाइट किया जा रहा है।

डी . यहूदी रीति-रिवाजों और विचारों की हिब्रूता [12:00-16:25]

बी: डी.एफ. को संयोजित करें; 12:00-22:28; मत्ती हिब्रू भाग 2 के रूप में

अब, यदि आप यहूदी लोगों को लिख रहे हैं, तो आपको यहूदी रीति-रिवाजों की व्याख्या करने की आवश्यकता नहीं है। तो यहाँ आपके पास कुछ रोचक उदाहरण हैं। मरकुस 7:3 की तुलना मत्ती 15:2 में दिए गए दृष्टान्त से की गई है। मत्ती 15:2, इसकी तुलना मरकुस 7:3 से की गई है। मुझे पहले मत्ती को पढ़ने दें, आप देखेंगे कि यह कितना संक्षिप्त और संक्षिप्त है: “आपके शिष्य बड़ों की परंपरा क्यों तोड़ते हैं, फरीसी शिकायत करते हैं। वे खाने से पहले अपने हाथ नहीं धोते हैं।” चर्चा का अंत। “आपके शिष्य, यीशु, बड़ों की परंपराओं का पालन नहीं कर रहे हैं।” उनकी आलोचना में, कोई स्पष्टीकरण नहीं है; यह

केवल मान लिया गया है कि लोगों को पता है कि फरीसी और अन्य लोग अपने हाथ धोते हैं। तो यह बस इतना ही कहता है, "आपके शिष्य बड़ों की परंपरा क्यों तोड़ते हैं, वे खाने से पहले अपने हाथ नहीं धोते हैं।" बस। चर्चा का अंत।

दूसरी ओर, हम दिखाने जा रहे हैं कि मार्क शायद रोमन श्रोताओं को लिख रहा है। इसलिए मार्क यह कहता है: "कुछ लोगों ने उसके शिष्यों को अशुद्ध चीज़ों से खाना खाते देखा, यानी बिना हाथ धोए"। और फिर आपके NIV में कोष्ठकों में यह लिखा होगा, "फरीसी और सभी यहूदी तब तक नहीं खाते जब तक कि वे बाज़ार से आने पर अपने हाथों को औपचारिक रूप से धो न लें, बड़ों की परंपरा को मानते हुए, जब तक कि वे न धोएँ और वे कई अन्य परंपराओं का पालन करते हैं, जैसे कि प्याले, घड़े और केतली धोना।" इसलिए आपके पास मार्क में यह लंबी व्याख्या है, कि यहूदी, जब वे बाज़ार में जाते हैं, तो वे अंदर आते हैं, वे परंपरा के अनुसार हाथ धोते हैं। वे न केवल अपने हाथ धोते हैं बल्कि वे केतली, घड़े और प्याले भी धोते हैं, जब वे अंदर आते हैं। इसलिए मार्क, क्योंकि वह रोमन श्रोताओं को लिख रहा है, उसे यह समझाना होगा कि यह परंपरा क्या है कि फरीसी यहाँ यीशु को पकड़ रहे हैं, उनके शिष्यों द्वारा हाथ न धोने के बारे में। इसलिए मार्क यीशु और फरीसियों के बीच बातचीत से कहीं ज़्यादा विस्तार से बताता है। मार्क ने अपने रोमन श्रोताओं के लिए जो टिप्पणी की है, वह यीशु और फरीसियों के बीच बातचीत से कहीं ज़्यादा लंबी है। यहाँ यह दिलचस्प है कि रीति-रिवाजों को मार्क में समझाया गया है, लेकिन मैथ्यू में नहीं।

स्वर्ग के राज्य के साथ भी यही बात सच है। मैथ्यू स्वर्ग के राज्य का ज़िक्र करता है, न कि परमेश्वर के राज्य का। बहुत से लोग इसे इस तरह से देखते हैं कि मैथ्यू यहूदी लोगों का ज़िक्र कर रहा है, और इसलिए वह "परमेश्वर" शब्द का इस्तेमाल नहीं करना चाहता। इसलिए वह "स्वर्ग" शब्द का इस्तेमाल करता है। इस तरह स्वर्ग के राज्य का इस्तेमाल करने में ईशनिंदा का कोई भाव नहीं है।

अब, यहाँ एक और है जो बहुत ही आकर्षक है। मैथ्यू 5:43 में यीशु अपने शत्रु से घृणा करने के बारे में बात करते हैं। "तुमने सुना है, 'अपने पड़ोसी से प्रेम करो, लेकिन फिर अपने शत्रु से घृणा करो।'" मैथ्यू 5:43 में, वह उद्धृत करता है: "तुमने सुना है, अपने शत्रु से

घृणा करो।" लेकिन पुराने नियम में कहीं भी ऐसा नहीं है जो कहता है कि अपने शत्रु से घृणा करो। लेकिन वास्तव में यह पता चलता है कि यह संभवतः कहाँ से आ रहा है - और लोग नोटिस करते हैं कि शायद यह सीधे उससे नहीं आ रहा है, लेकिन यह उस समय यहूदी समुदाय के सामान्य लोकाचार को दर्शाता है। यह मृत सागर स्क्रॉल में पाया जाता है। मृत सागर स्क्रॉल में "अपने शत्रु से घृणा करो" लिखा है। इसलिए मृत सागर स्क्रॉल में "अपने शत्रु से घृणा करो" लिखा है। दूसरे शब्दों में, यीशु जो उद्धृत कर रहे हैं वह पुराना नियम नहीं है, बल्कि वह उस समय यहूदी धर्म में प्रचलित कुछ उद्धृत कर रहे हैं। मृत सागर स्क्रॉल में वास्तव में ऐसा कुछ दर्ज है, और इसलिए यह बहुत दिलचस्प है कि मैथ्यू की पुस्तक में, यीशु को बहुत, बहुत यहूदी दिखाया गया है। सिर्फ पुराने नियम के उद्धरण ही नहीं, बल्कि यहाँ वह उन चीज़ों का हवाला दे रहा है जो उस समय प्रचलित थीं और जिन्हें डेड सी स्क्रॉल में दर्ज किया गया था। तो ऐसा लगता है कि वह जानता है--मैं यह नहीं कह रहा हूँ कि वह डेड सी स्क्रॉल और उनके उद्धरण के बारे में जानता है, लेकिन मैं यह कह रहा हूँ कि डेड सी स्क्रॉल उस समय चल रही एक व्यापक सांस्कृतिक घटना को दर्शा रहे होंगे। तो फिर, यह एक यहूदी फोकस को दर्शाता है।

इब्रानीपन—सद्वक्तियों का ज्ञान [16:25- 18:50]

इसी तरह की बात, थोड़ी अलग लेकिन उससे मिलती-जुलती, सद्वक्तियों के साथ भी है। सद्वक्तियों को दो बातों पर विश्वास नहीं है: वे यह नहीं मानते कि मृतकों में से पुनरुत्थान होता है, और वे यह भी नहीं मानते कि स्वर्गदूत होते हैं। जैसा कि हमने पहले कहा, सद्वक्तियों का समूह धनी था, और यहूदी धर्म में फरीसी वास्तव में बहुत अधिक सम्मानित थे। लोग फरीसी का सम्मान करते थे। फरीसी वास्तव में सख्त यहूदी माने जाते थे, जबकि सद्वक्तियों को धनी और हेलेनिस्टिक माना जाता था। उन्होंने ग्रीक संस्कृति को अपना लिया है, और इसलिए वे एक निश्चित अर्थ में हेलेनिज़्म के साथ एकीकरण में उस अधिक उदार दृष्टिकोण की ओर बढ़ रहे थे। अब, सद्वक्तियों के साथ क्या हुआ? सद्वक्तियों ने यीशु के पास आकर कहा, "यीशु, हमारे पास यह समस्या है।" वे स्पष्ट रूप से उसे फंसा रहे हैं, और

इसलिए वे उससे कहते हैं "एक महिला थी, और उसकी शादी एक आदमी से हुई थी। उनके कोई बच्चे नहीं थे और वह आदमी मर जाता है। खैर, जैसा कि लेविरेट विवाह होता है, दूसरे भाई को महिला से शादी करनी चाहिए और पहले बेटे के वंश को बढ़ाना चाहिए। खैर, भाई उससे शादी करता है और उनके कोई बच्चे नहीं होते और वह भी मर जाता है। अंत में, सभी सात भाई इस महिला से शादी करते हैं और वे सभी मर जाते हैं। इसलिए, पुनरुत्थान में वह किसकी पत्नी होगी?" दूसरे शब्दों में, पुनरुत्थान के समय, उसकी शादी सात पुरुषों से हुई है, स्वर्ग में क्या सौदा है? क्या वहाँ बहुविवाह है, जहाँ एक महिला के सात पुरुष होते हैं? आप वहाँ सभी प्रकार के निहितार्थ देख सकते हैं।

फिर यीशु हमेशा की तरह शानदार तरीके से जवाब देते हैं। यीशु कहते हैं, "तुम परमेश्वर की शक्ति को नहीं जानते, तुम शास्त्र को नहीं जानते। क्योंकि, पुनरुत्थान में, वे स्वर्गदूतों की तरह होंगे; न तो शादी करेंगे और न ही शादी में दिए जाएँगे।" और यह सद्दूकियों को परेशान करता है क्योंकि वे स्वर्गदूतों पर भी विश्वास नहीं करते। इसलिए यीशु ने उस बात का इस्तेमाल किया जिसे उन्होंने सवाल का जवाब देने से मना कर दिया था, और कहा, "कोई आश्चर्य नहीं कि तुम पुनरुत्थान को क्यों नहीं समझ सकते, तुम स्वर्गदूतों पर विश्वास नहीं करते जो तुम्हारी समस्या को ऐसे ही हल कर देंगे।" इसलिए यीशु ने स्वर्गदूतों के बारे में उनकी अपनी समझ की कमी का इस्तेमाल करते हुए इसे वापस उन पर डाल दिया और उनके खिलाफ इसका इस्तेमाल किया। तो, फिर से, यह एक अंदरूनी लड़ाई है। यीशु जानता था कि सद्दूकियों की स्थिति क्या थी, इसलिए वह इसका इस्तेमाल करता है और इसे उन पर थोप देता है। तो फिर से, यह एक यहूदी संदर्भ है, फरीसियों और सद्दूकियों के बीच संघर्ष। यीशु इस बात से बहुत अच्छी तरह वाकिफ हैं।

F. इब्रानीपन— स्वर्ग का राज्य और यहूदी अफ़वाहें [18:50-22:28]

अब, आगे, आइए स्वर्ग के राज्य और परमेश्वर के राज्य के बीच के अंतर को देखें। हमने कहा कि मैथ्यू में कई समानांतर अंशों में "स्वर्ग का राज्य" है, और जब आप मार्क और अन्य स्थानों पर जाते हैं, तो वे "परमेश्वर का राज्य" कहेंगे। इस तरह के संदर्भ में परमेश्वर शब्द के उपयोग में अंतर है। अब, मैथ्यू की पुस्तक में वास्तव में बारह बार इज़राइल का उपयोग किया गया है, लेकिन छह बार मैथ्यू की पुस्तक के लिए अद्वितीय हैं। इसलिए ऐसा लगता है कि वह इज़राइल को हाइलाइट कर रहा है और बारह बार में से छह बार जब वह इसका उपयोग करता है, तो यह मैथ्यू की पुस्तक के लिए अद्वितीय है जो फिर से एक यहूदी अभिविन्यास को दर्शाता है, कि वह "इज़राइल" को हाइलाइट कर रहा है। जहाँ अन्य सुसमाचार लेखकों ने इज़राइल को वहाँ नहीं रखा, मैथ्यू ने उसे रखा है। तो यह वहाँ एक यहूदी अभिविन्यास का एक और सबूत है।

अब यह एक ऐसी बात है जो मुझे वाकई बहुत अच्छी लगती है। मैथ्यू 28:11-15 से। और यहाँ जो हमारे पास है वह एक यहूदी अफवाह है। मैथ्यू ने इस यहूदी अफवाह को उठाया। यह पुनरुत्थान के बाद की बात है। यीशु को सूली पर चढ़ाया गया, मरा और दफनाया गया, वह फिर से जी उठा, उसने अपने शिष्यों और भाई से कहा "गलील जाओ," और यह कहता है, "जब महिलाएँ अपने रास्ते पर थीं, तो कुछ पहरेदार शहर में गए और मुख्य पुजारी को सब कुछ बताया जो हुआ था। जब मुख्य पुजारी ने बुजुर्गों से मुलाकात की और एक योजना बनाई। उन्होंने सैनिकों को एक बड़ी रकम दी, और उनसे कहा, 'तुम कहना कि "उसके शिष्य रात में आए और जब हम सो रहे थे, तो उसे चुरा ले गए।" अगर यह रिपोर्ट राज्यपाल तक पहुँचती है, तो हम तुम्हारी पीठ थपथपाएँगे।' अगर यह रिपोर्ट राज्यपाल तक पहुँचती है, तो हम उसे संतुष्ट करेंगे और तुम्हें परेशानी से दूर रखेंगे।' इसलिए सैनिकों ने पैसे लिए और जैसा उन्हें बताया गया था वैसा ही किया। और यह कहानी आज तक यहूदियों के बीच व्यापक रूप से प्रसारित की गई है।" अब मैथ्यू शायद 60 ईस्वी के बाद लिख रहा है। तो यह यीशु के मरने और मृतकों में से जी उठने के लगभग 30 साल बाद की बात है, और वह कहता है "और यह कहानी आज तक यहूदियों के बीच व्यापक रूप से प्रसारित की गई है।" तो मैथ्यू को पता लगता है, और वह इस यहूदी अफवाह को उठाता है,

जो फैलाई गई थी, कि शिष्यों ने शरीर चुराने के लिए पहरेदारों को पैसे दिए थे। तो, फिर से, यहूदी समुदाय के अंदर यहूदी अफवाह, वह अफवाह फैलाई गई थी। इसलिए मैथ्यू उस अफवाह को खत्म कर देता है और कहता है "अरे, यह वही हुआ: उन लोगों को ऐसा कहने के लिए पैसे दिए गए थे।"

अब, रब्बी परंपराओं में एक परंपरा है कि यीशु एक जादूगर थे। यीशु को एक जादूगर, एक तरह के जादूगर के रूप में चित्रित किया गया है। मैथ्यू की पुस्तक 12:24f में भी, वे कहते हैं कि यीशु राक्षसों के राजकुमार, बेलज़ेबूब द्वारा राक्षसों को निकाल रहे हैं। इसलिए यह विचार कि यीशु एक जादूगर हैं, मैथ्यू की पुस्तक में पहले से ही लाया गया है। ऐसा माना जाता है कि शायद मैथ्यू यहूदी आलोचनाओं को कम करने की कोशिश कर रहा है कि यीशु एक जादूगर थे। फिर यीशु ने यह कहते हुए इसका खंडन किया, "अगर मैं बेलज़ेबूब द्वारा निकालता हूं, तो बेलज़ेबूब खुद का विरोध कर रहा है, इसका कोई मतलब नहीं है।" फिर वह पूछता है "तो फिर आपके शिष्य उन्हें किसके द्वारा निकालते हैं?" तो, वैसे भी, इन यहूदी अवधारणाओं के साथ काम करते हुए, मैथ्यू की पुस्तक यहूदी धर्म की ओर बहुत झुकी हुई लगती है।

जी. ईसाई धर्म एक यहूदी संप्रदाय के रूप में [22:28-26:53]

**सी: संयुक्त जीजे; 22:28-34:43; ईसाई धर्म एक यहूदी संप्रदाय के रूप में,
मैथ्यू में विदेशी**

जबकि पुस्तक में यहूदी अफवाहों और यहूदी अभिव्यक्ति के विभिन्न तरीकों को दिखाया गया है, इसमें यह भी बहुत व्यापकता है, जहाँ यह ईसाई धर्म को यहूदी धर्म से अलग करती है। हो सकता है कि आरंभिक चर्च शुरू में यहूदी था, ईसाई धर्म की शुरुआत यरूशलेम में हुई, यीशु वहीं मृतकों में से जी उठे, और फिर पिन्तेकुस्त आया। पिन्तेकुस्त वहाँ मंदिर क्षेत्र में होता है, और यीशु जैतून के पहाड़ पर चढ़ते हैं और जैतून के पहाड़ से स्वर्ग की ओर बढ़ते हैं, जो यरूशलेम के ठीक बाहर पूर्व में है। तो यह एक बहुत ही यहूदी बात है, और आरंभिक चर्च को वास्तव में नाज़रीन नामक एक संप्रदाय माना जाता था।

आपके पास फरीसी थे, आपके पास सद्दूकी थे, और अब आपके पास नाज़रीन थे, जो नाज़रेथ के यीशु का अनुसरण करते थे। तो ईसाई धर्म शुरू में यहूदी धर्म के भीतर एक संप्रदाय था, और फिर जो हुआ वह यह था कि उत्पीड़न आया और ईसाइयों में यह अलगाव हो गया। लेकिन ईसाई यहूदी धर्म से कैसे अलग हो गए? उन्हें अलग होने के लिए मजबूर किया गया क्योंकि उन्हें मार दिया गया था। जेम्स को मार दिया गया, और स्टीफन को मार दिया गया (प्रेरितों के काम 7), और पॉल उनमें से कुछ में शामिल था। इसलिए, एक अर्थ में, प्रारंभिक ईसाइयों को एक तरह से बड़ी पहचान का संकट था क्योंकि वे यहूदी थे। यीशु यहूदी थे, बारह प्रेरित यहूदी थे। इसलिए प्रारंभिक चर्च में बहुत यहूदीपन है।

अब उन्हें जबरन बाहर निकाला जा रहा है, और एक अर्थ में, उनकी पहचान के साथ इसका क्या संबंध है? एक अर्थ में वे अब यहूदी नहीं थे। तो आपको यह संबंध मिलता है: "हाँ, हम यहूदी हैं लेकिन हमें पूरी दुनिया में सुसमाचार फैलाना चाहिए।" तो आपको यह तनाव मिलता है। किस अर्थ में गैर-यहूदी आए? क्या गैर-यहूदियों को ईसाई बनने से पहले यहूदी बनना पड़ा? तो यह एक तनाव बन जाता है, और शुरुआती चर्च में, उत्पीड़न इसलिए आया क्योंकि एक बार, जब चर्च को यहूदी धर्म का एक संप्रदाय माना जाता था, यहूदियों को रोमनों से एक विशेष छूट मिली हुई थी। यहूदियों को यहूदी होने की अनुमति थी, और यहूदी एक ईश्वर की सेवा करते थे और रोम के देवताओं की सेवा नहीं करते थे। तो यहूदियों को मूल रूप से रोमनों से एक राहत मिली और उन्हें इतना बुरा सताया नहीं गया।

और ईसाई, जब तक ईसाई उस छत्र के नीचे थे, ईसाई उस तरह से सुरक्षित थे। लेकिन जब ईसाई एक अलग इकाई बन गए, तो शुरुआती ईसाइयों की निंदा की गई और उन्हें मूल रूप से तीन चीजों के लिए सताया गया। सबसे पहले, उन्हें नास्तिक के रूप में निंदा की गई, क्योंकि ईसाई एक ऐसे भगवान की पूजा करते थे जिन्हें आप देख नहीं सकते थे। इसलिए अन्य देवताओं की मूर्तियाँ और विभिन्न चीजें थीं, ईसाइयों को नास्तिक के रूप में निंदा की गई। शुरुआती ईसाइयों में से एक, जब वह उस आग पर मर रहा था जो उसे जलाने वाली थी, तो उसे नास्तिक के रूप में निंदा की गई और पॉलीकार्प ने कहा, "नास्तिकों को दूर करो।" यह कहते हुए कि तुम लोग नास्तिक हो, क्योंकि तुम उन चीजों पर विश्वास

करते हो जो वास्तव में भगवान नहीं हैं। इसलिए चर्च को नास्तिक होने के लिए निंदा की गई क्योंकि वे एक ऐसे भगवान में विश्वास करते थे जिसे आप देख नहीं सकते थे। दूसरे, उन्हें निंदा की गई क्योंकि वे नरभक्षी थे। उन्हें नरभक्षण के लिए निंदा की गई, क्योंकि उन्होंने उसका शरीर खाया और उसका खून पिया। तो आप देखते हैं कि शुरुआती यूचरिस्ट और प्रभु भोज का इस्तेमाल किया गया था, उन्होंने कहा "वाह, वे उसका शरीर खा रहे हैं और उसका खून पी रहे हैं, ये लोग नरभक्षी हैं।" इसलिए उन्हें नरभक्षी के रूप में निंदा की गई। और अंत में, उन्हें अनाचार के लिए निंदा की गई क्योंकि उन्होंने अपने भाइयों और बहनों से शादी की; उन्होंने अपने छोटे समूहों के भीतर शादी की। इसलिए उन्होंने अपने भाइयों और बहनों से शादी की, लेकिन उन्हें एहसास नहीं हुआ कि वे आध्यात्मिक भाइयों और बहनों के बारे में बात कर रहे थे जिसका मतलब यह नहीं था कि आप वास्तव में उनसे शारीरिक रूप से संबंधित हैं।

इसलिए अनाचार, नरभक्षण और नास्तिकता के लिए, प्रारंभिक ईसाइयों को सताया गया था। फिर शायद एक बड़ी बात और मेरे अच्छे दोस्त डेव मैथ्यूसन अपने व्याख्यान में बहुत अच्छी तरह से बताते हैं कि आप ऑनलाइन देख सकते हैं, सम्राट की पूजा है। फिर इसके विभिन्न क्षेत्रीय पहलू, जहाँ क्षेत्रीय लोग सम्राट के प्रति अपनी निष्ठा दिखाने की कोशिश कर रहे हैं, यह मांग करके कि ईसाई और अन्य लोग सम्राट की पूजा करके सम्राट के प्रति अपनी निष्ठा दिखाएँ। फिर जब ईसाई ऐसा नहीं करते हैं, तो यह एक समस्या बन जाती है। तो, यह यहूदी धर्म से बाहर निकलने और अन्यजातियों की ओर बढ़ने का विस्तार है।

I. मसीह की वंशावली में विदेशी - तामार और राहाब [26:53-31:27]

और इसलिए, मैं मैथ्यू अध्याय 1 के माध्यम से वंशावली के रूप में बात करना चाहता हूँ। मुझे पता है कि जब आप वंशावली के बारे में बात करते हैं तो हर कोई सो जाता है। यह "यह वास्तव में उबाऊ है, हम वंशावली नहीं बनाते हैं। वंशावली बनाने से पहले आपको कम से कम सत्तर वर्ष का होना चाहिए"। लेकिन आइए मैथ्यू अध्याय 1 में वंशावली के बारे में सोचें। यीशु मसीह, दाऊद के पुत्र, अब्राहम के पुत्र। अब्राहम ने इसहाक को जन्म

दिया, और इसहाक ने याकूब को जन्म दिया, और याकूब ने इस्राएल के पुत्रों को जन्म दिया, बारह गोत्र। फिर बारह गोत्र यहूदा में आए, और यहूदा ने पेरेस और जेरह को जन्म दिया और इस तरह से नीचे आए। तो आपके पास यह सूची है जो यहूदा से दाऊद तक, और उसके बाद दाऊद के वंशजों, सुलैमान, दाऊद के पुत्र, और फिर यूसुफ तक जाती है। मैथ्यू अध्याय 1 यूसुफ की वंशावली देता है, यीशु की कानूनी वंशावली ताकि वह दाऊद के पुत्र के रूप में दाऊद के सिंहासन पर बैठ सके।

दिलचस्प बात यह है कि, जबकि इसमें इस्राएल के सभी राजाओं की सूची दी गई है जो बहुत, बहुत, बहुत यहूदी हैं, यहाँ चार महिलाओं का उल्लेख किया गया है। मसीह की वंशावली में चार महिलाएँ हैं, और मैं उनके बारे में बताना चाहता हूँ क्योंकि मुझे लगता है कि यह बिल्कुल दिलचस्प है।

पहला है तामार। इसमें कहा गया है कि यहूदा ने तामार नाम की इस महिला से पेरेस और जेरह को जन्म दिया। खैर, तामार कौन है? हम जानते हैं कि तामार कौन थी। यह उत्पत्ति अध्याय 38 में वापस आता है। यह तामार के बारे में बात करता है और यहाँ मूल रूप से कहानी है: यहूदा का एक बेटा था, जिसने तामार से शादी की, वह एक कनानी थी; वह यहूदी नहीं थी। उसके बेटे एर ने उससे शादी की। एर की मृत्यु हो गई। तो फिर क्या हुआ? उसका एक और बेटा था जिसका नाम ओनान था, और उसने अपना दूसरा बेटा उसे दे दिया। उसने बीज गिरा दिया (और मैं विवरण में नहीं जाना चाहता) और मूल रूप से भगवान ने ओनान को मार दिया। तो अब यहूदा का बड़ा बेटा जो उससे विवाहित था, मर गया, और उसका दूसरा बेटा, क्योंकि वह लेविरेट विवाह को पूरा करने में विफल रहा, भगवान ने उसे मार दिया। अब उसका सबसे छोटा बेटा है, और दुनिया में ऐसा कोई तरीका नहीं है कि वह अपने सबसे छोटे बेटे को इस महिला को दे। जिस किसी को भी यह महिला छूती है वह मर जाता है।

फिर यहूदा की पत्नी मर जाती है, इसलिए अब यहूदा बिना पत्नी के रह जाता है और वह भेड़ों का ऊन कतरने के लिए बाहर जा रहा होता है। वह बाहर जा रहा होता है, वह रास्ते में चल रहा होता है और अंदाज़ा लगाइए कि रास्ते में उसे कौन मिलता है? तामार को

यह एहसास हो रहा होता है कि उसे सबसे छोटा बेटा नहीं मिलने वाला है। इसलिए वह वेश्या का वेश धारण करती है, और यहूदा उसके पास आता है और यौन संबंधों के बदले में उसे उसकी अंगूठी मिल जाती है। वह तब तक के लिए अस्थायी भुगतान के रूप में उसकी अंगूठी चाहती है जब तक कि वह बकरी नहीं लाता। उसे पता चलता है कि वह गर्भवती है। यहूदा उसे पत्थर मारकर मार डालना चाहता है, और फिर वह उसकी अंगूठी निकालती है और कहती है, "अरे, यहूदा, तुम्हें यह याद है? मुझे तुम्हारा वीज़ा नंबर मिल गया है यार, तुम्हारा काम हो गया।" और फिर यहूदा कहता है, "तुम मुझसे ज़्यादा धार्मिक हो।" इसका महत्व यह है कि तामार क्या है? तामार वह कनानी महिला है जिसने वेश्या की भूमिका निभाई थी।

जैसे ही मैं राहाब कहता हूँ, मेरे दिमाग में क्या आता है? खैर, राहाब क्या? राहाब एक वेश्या है, एक वेश्या। राहाब एक कनानी वेश्या थी जिसे हम यहोशू से जानते हैं जब वे भूमि पर कब्ज़ा करने जा रहे थे। उन्होंने जॉर्डन नदी पार की, और वे यरीहो के खिलाफ़ लड़ने जा रहे थे। उन्होंने जासूस भेजे, जासूस राहाब नामक वेश्या के घर गए, वह एक वेश्या थी, वह शहर में होने वाली हर बात जानती थी। उसने यरीहो के राजा को धोखा देने के लिए जासूसों को छिपाया। फिर यह पता चला कि यरीहो की वेश्या राहाब, वह मसीहाई वंश में है। वह दाऊद की परदादी है। वह यीशु मसीह की वंशावली में है, जैसा कि तामार है। तो इन दोनों महिलाओं में क्या समानता थी? खैर, उन दोनों में समानता यह है कि वे कनानी हैं। वे यहूदी नहीं हैं। तो यहाँ आपके पास यह सुंदर, शुद्ध, यहूदी वंशावली है, और चार महिलाएँ इसमें फंसी हुई हैं। और पहली दो बिल्कुल भी यहूदी नहीं हैं। वे यहूदी महिलाएँ नहीं हैं।

जे. मसीह की वंशावली में विदेशी - उरिय्याह की पत्नी और रूत [31:27-34:43]

अब, जो बात मेरे लिए बहुत दिलचस्प है, वह है यहाँ उरीया की पत्नी का संदर्भ। सुलैमान किससे आने वाला है? सुलैमान बाथशेबा से आने वाला है। हर कोई डेविड और बाथशेबा को जानता है, यह कहानी आज भी मशहूर है। लेकिन मैथ्यू की वंशावली में ध्यान दें, उसने बाथशेबा का नाम नहीं लिया है। बाथशेबा, एलीआम की बेटी, बाथशेबा - शपथ की

बेटी)। अच्छा यहूदी नाम, अच्छी यहूदी महिला। उसे डेविड से परेशानी है। लेकिन कम से कम वह काफी हद तक यहूदी है। लेकिन जब मैथ्यू वंशावली देता है, तो वह बाथशेबा नहीं कहता है, वह कहता है: "वह उरीया की पत्नी रही है।" यही एक कारण है कि मुझे NLT अनुवाद से परेशानी है। NLT आपको बाथशेबा नाम देता है, मोटे तौर पर वे ऐसा इसलिए करते हैं क्योंकि हर कोई जानता है कि बाथशेबा कौन है। अगर वे कहते हैं कि वह जो उरीया की पत्नी थी, तो कोई नहीं जानता कि उरीया कौन है। वह पति है जिसे मार दिया गया था। डेविड ने इस आदमी को मार डाला ताकि वह उसकी पत्नी को चुरा सके। उरीया क्या था? उरीया एक हिती था। इसलिए ध्यान दें, मैथ्यू ने बतशेबा का उल्लेख नहीं किया है, भले ही वह नाम अधिक लोकप्रिय है और हर कोई बतशेबा को जानता होगा। इसके बजाय वह उरीया का उल्लेख करता है, कि वह उरीया की पत्नी है, उरीया हिती। तो फिर, यह वंशावली में यह विदेशी संबंध है, और यह वास्तव में दाऊद का बतशेबा के साथ संबंध और सुलैमान को जन्म देना है। इसलिए सुलैमान की माँ बतशेबा है, जो उरीया की पत्नी थी। मैथ्यू ने इसका उल्लेख उरीया की पत्नी, उरीया हिती के रूप में किया है।

और आखिरी जो वास्तव में प्रसिद्ध है, चौथी महिला, रूथ है। रूथ का उपनाम क्या था? उसका नाम रूथ द मोआबी है। और हमारे पास एक पूरी किताब है, जो पुराने नियम की खूबसूरत किताबों में से एक है, रूथ और नाओमी और बोअज़ के बारे में, और वहाँ की कहानी, एलीमेलेक और कैसे वे मोआब गए और सभी पुरुष मर गए। फिर रूथ बोअज़ से शादी कर लेती है। लेकिन रूथ एक मोआबी है। वह बोअज़ से शादी करती है और फिर वे डेविड के परदादा-परदादी बनते हैं।

तो मैं यहाँ क्या सुझाव दे रहा हूँ: तामार, राहाब, रूथ और उरीया की पत्नी, ये सभी गैर-यहूदी लोगों से जुड़ी हैं, जो गैर-यहूदी, बाहरी लोग हैं। तो मैथ्यू अध्याय 1 में यीशु मसीह की वंशावली में पहले से ही है: हाँ, ज़रूर, मसीह, दाऊद का पुत्र, अब्राहम का पुत्र, लेकिन आप वंशावली में यह पाते हैं, वहाँ जिन चार महिलाओं का उल्लेख किया गया है। केवल चार महिलाओं का उल्लेख किया गया है, उनमें से प्रत्येक का इन विदेशी कनेक्शनों से संबंध है। एक अर्थ में, यह अब्राहमिक वाचा की पूर्ति है। जहाँ अब्राहमिक वाचा यह होगी कि,

"अब्राहम, तुम्हारे वंशज सभी राष्ट्रों के लिए आशीर्वाद होंगे।" तो आप पहले से ही देख सकते हैं, इस तरह से सख्त यहूदी धर्म से सभी राष्ट्रों में जाना, अब्राहमिक वाचा को पूरा करना, एक तरह से प्रारंभिक तरीके से।

क. व्यापकता - सार्वभौमिक मिशन और बुद्धिमान पुरुष [34:43-42:55]

डी: संयुक्त केएल; 34:43-47:05; मैथ्यू की व्यापकता

पुस्तक के अंत में एक बहुत प्रसिद्ध अंश है, यह मैथ्यू अध्याय 1 से है, हम यहूदी धर्म के टूटने को देखते हैं, लेकिन फिर मैथ्यू अध्याय 28:18 में, आपको यह कथन मिलता है, और फिर से, यह महान आदेश है: "तब ग्यारह शिष्य गलील में उस पहाड़ पर गए जहाँ यीशु ने उन्हें जाने के लिए कहा था। जब उन्होंने उसे देखा, तो उन्होंने उसकी पूजा की, लेकिन कुछ ने संदेह किया।" हम जानते हैं कि यूहन्ना हमें संदेह करने वाले थॉमस और अन्य लोगों के बारे में बताता है। वैसे मुझे वह नाम पसंद नहीं है, संदेह करने वाला थॉमस, लेकिन जब हम यूहन्ना में जाएँगे तो हम उस पर चर्चा करेंगे। "तब यीशु उनके पास आया और कहा, 'स्वर्ग और पृथ्वी का सारा अधिकार मुझे दिया गया है। इसलिए," और इसे ही महान आदेश कहा जाता है, "इसलिए, जाओ और सभी राष्ट्रों के लोगों को चेला बनाओ, उन्हें पिता और पुत्र और पवित्र आत्मा के नाम से बपतिस्मा दो, और उन्हें सब कुछ मानना सिखाओ जो मैंने तुम्हें आज्ञा दी है, और निश्चित रूप से मैं हमेशा तुम्हारे साथ हूँ युग के अंत तक।" तो मूल रूप से जाकर शिष्य बनाने का यह विचार (क्या आप देखते हैं कि यह शिष्यत्व विषय को कैसे खींचता है?) सभी राष्ट्रों के लोगों को पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा के नाम पर बपतिस्मा देना। तो पुस्तक इन गैर-यहूदी महिलाओं के साथ इस बात से शुरू होती है, और यह सभी राष्ट्रों के लोगों को शिष्य बनाने के साथ समाप्त होती है। और इसलिए यह पुस्तक की शुरुआत और अंत में है, और वास्तव में, जो भी दिलचस्प है, केवल मैथ्यू की पुस्तक में ही बुद्धिमान पुरुषों को देखा जा सकता है। मार्क कहानी को रिकॉर्ड नहीं करता है, ल्यूक नहीं करता है, जॉन नहीं करता है, केवल मैथ्यू बुद्धिमान पुरुषों को रिकॉर्ड करता है। फिर से, बुद्धिमान पुरुष इस संकेत, इस पूर्वाभास की तरह लगते हैं कि सुसमाचार यहूदी धर्म से परे

जाता है, और यहाँ पहले लोग, वह कहाँ है जो यहूदियों का राजा पैदा हुआ है, पहले लोग जिन्होंने महसूस किया कि वह यहूदियों का राजा है। याद रखें कि कहानी यीशु के सिर के ऊपर इस चिह्न के साथ कैसे समाप्त होती है, यहूदियों का राजा। और यहाँ मेसोपोटामिया से आने वाले जादूगर हैं, जो कह रहे हैं, "यहूदियों का राजा कहाँ पैदा हुआ है?" फिर से, कहानी यहूदियों के इस राजा के साथ शुरू और खत्म होती है। सबसे पहले कौन इसे पहचानता है, यह यहूदी लोग नहीं हैं, यह गैर-यहूदी लोग हैं, ये जादूगर, ये जादूगर, या मेसोपोटामिया से ज्योतिषी आते हैं। तो यह महत्वपूर्ण और दिलचस्प है, इस संबंध में बाहर निकलने के संदर्भ में।

अब, यहाँ कुछ चीजें हैं जो आपको इस्राएल के इस अस्वीकृति से मिलती हैं। मैथ्यू 8 में आपको रोमन सेंचुरियन मिलता है। मैथ्यू में अध्याय 8 और 9 में यीशु द्वारा किए गए चमत्कारों के बारे में बहुत कुछ है। अध्याय 13 में राज्य के दृष्टांत हैं। अध्याय 8 और 9 में बहुत सारे चमत्कार हैं। चमत्कारों में से एक यह आदमी है जो एक सेंचुरियन है, वह सौ लोगों पर रोमन सेंचुरियन है। वह यीशु के पास आता है और देखता है कि सेंचुरियन अपने सेवक के बारे में चिंतित है। तो आपके पास इस आदमी की एक सुंदर छवि है जो सेना के 100 लोगों से बहुत ऊपर है, एक बहुत ही प्रतिष्ठित स्थान है और फिर भी वह अपने सेवक के बारे में चिंतित है। वह यीशु के पास आता है, और वह यीशु से कहता है, "क्या आप मेरे सेवक को ठीक कर देंगे, मेरा सेवक लकवाग्रस्त है, उसे बहुत समस्याएँ हैं, क्या आप उसे ठीक कर देंगे।" और यीशु कहते हैं "ठीक है, मैं तुम्हारे साथ चलूँगा।" यह सोचकर कि वह इस सूबेदार के घर जाएगा और उसके पास इन सभी नौकरों के साथ एक बड़ा सूबेदार घर है। वह आदमी कहता है, "मैं अपनी छत के नीचे आने के योग्य नहीं हूँ।" सूबेदार यीशु से कहता है, यीशु यह किसान यहूदी है, "मैं इस योग्य नहीं हूँ कि तुम किसान यहूदी, मेरी छत के नीचे आओ।" वह कहता है, "मैं जानता हूँ कि अधिकार के अधीन होना कैसा होता है।" उसने कहा, "मैं एक शब्द बोलता हूँ और मेरे नौकर वही करते हैं जो मैं कहता हूँ। मैं अधिकार के अधीन एक आदमी हूँ।" उसने कहा, "बस शब्द बोलो, तुम बस शब्द बोलो और मेरा नौकर चंगा हो जाएगा।" और यीशु कहते हैं, "वाह, मैंने पूरे इस्राएल में ऐसा विश्वास

नहीं पाया है... इस्राएल में किसी से भी इतना बड़ा विश्वास नहीं पाया है।" एक अर्थ में, वह इस्राएल को फटकार रहा है, कि यहाँ यह गैर-यहूदी सूबेदार है। बहुत से लोग चाहते थे कि यीशु मसीहा बनें जो रोमन जुए को उतार फेंके, एक कट्टरपंथी बनें और कहें "नहीं, हमें रोमनों से छुटकारा पाना है, मैं यहूदियों का राजा हूँ, मैं दाऊद का पुत्र हूँ, मैं सिंहासन पर बैठने जा रहा हूँ।" यीशु ऐसा नहीं कहते, बल्कि वे कहते हैं "यहाँ एक रोमन सेनापति है जो विश्वास का एक आदर्श है, जो मैंने पूरे इस्राएल में पाया है उससे बेहतर है।" तो फिर से, वे चीजों को करने के उस सख्त यहूदी तरीके से बाहर निकल रहे हैं।

मैथ्यू 11 में एक प्रसिद्ध उद्धरण है: "हाय हो तुम खुराज़िन। हाय हो तुम बेथसैदा। यदि तुम्हारे यहाँ जो चमत्कार हुए हैं, वे सोर और सीदोन में हुए होते।" अब सोर और सीदोन कहाँ हैं? सोर और सीदोन लेबनान में हैं। वे यहूदी नहीं हैं, वे गैर-यहूदी हैं। उसने कहा, "हाय हो तुम खुराज़िन, हाय हो तुम बेथसैदा।" ये दो स्थान हैं जो गलील के समुद्र तट के ठीक किनारे हैं। वे यहूदी हैं, पूरी तरह से यहूदी, और वह कहता है, "यदि तुम्हारे यहाँ जो चमत्कार हुए हैं, वे सोर और सीदोन में हुए होते, तो वे बहुत पहले ही पश्चाताप कर चुके होते।" इसलिए वह जो कुछ हो रहा था, उसके लिए सोर और सीदोन की सराहना कर रहा है, और विश्वास की कमी और उसे मिले अस्वीकार की निंदा कर रहा है और इन दो यहूदी शहरों, खोराज़िन और बेथसैदा की निंदा कर रहा है।

फिर दुष्ट किरायेदारों का दृष्टांत है। जब आप दृष्टांतों से निपट रहे होते हैं, तो मुझे पता है कि जब मुझे पहले दृष्टांत सिखाए गए थे, तो बोने वाले का दृष्टांत: बोने वाला बीज बोने के लिए बाहर जाता है, कुछ रास्ते में गिरते हैं, कुछ चट्टानी मिट्टी पर गिरते हैं, कुछ कांटों और खरपतवारों के बीच गिरते हैं, और वे डूब जाते हैं, और कुछ अच्छी मिट्टी पर गिरते हैं और इससे भरपूर फसल होती है। मुझे बताया गया था कि दृष्टांत हमेशा कुछ ऐसा होता था जो बहुत स्वाभाविक और बहुत सामान्य होता था, कि दृष्टांत ऐसी चीजें होती थीं जो हर दिन की जिंदगी में होती थीं। मैं उस पर थोड़ा सवाल उठाना चाहता हूँ। मुझे लगता है कि कभी-कभी दृष्टांत की कहानियाँ ऐसी चीजें होती हैं जो कुछ हद तक अवास्तविक होती हैं, और कभी-कभी वे किसी बात को समझाने के लिए अवास्तविक होती हैं। आपके पास यहाँ

किरायेदारों के साथ एक है। तो इस किसान को अपनी ज़मीन मिली है, और वह जो करता है, वह यह है कि किसान फिर बाहर जाता है और वह अपनी ज़मीन इन किरायेदार किसानों को किराए पर देता है। तो ये किरायेदार उसकी ज़मीन पर खेती करने जा रहे हैं और फिर सौदा यह है कि वह उन्हें अपनी ज़मीन इस्तेमाल करने देता है, वे फ़सल उगाते हैं और वे उसे उसका एक हिस्सा देते हैं, और उसे इसका एक प्रतिशत मिलता है। तो क्या होता है, किरायेदार ऐसा करते हैं, वह इन किरायेदार किसानों से किराया वसूलने के लिए अपने नौकरों को भेजता है। लोग क्या करते हैं, वे उसके नौकरों को पकड़ते हैं और कुछ को पीटते हैं और फिर वह और नौकरों को भेजता है और वे वास्तव में उसके कुछ नौकरों को पीटते हैं और मार देते हैं जिन्हें वह इन किसानों के पास भेज रहा है।

अंत में, वह कहता है कि वे मेरे बेटे का आदर करेंगे और उसका सम्मान करेंगे। मुझे लगता है कि यह थोड़ा अवास्तविक है। यदि आप इन किरायेदारों के पास नौकर भेजते हैं और सोचते हैं कि वे भुगतान करेंगे, और वे आपके नौकरों को पीटते हैं और उनमें से कुछ को मार देते हैं, तो आप अपने बेटे को बाहर नहीं भेजेंगे, आप शायद खुद जाकर उन्हें उड़ा देंगे। लेकिन वैसे भी, वह अपने बेटे को भेजता है, और आपको यहाँ कल्पना मिलती है। यह ईश्वर पिता है जो अपने बेटे को इस्राएल के पास भेज रहा है, और इस्राएल, नबियों की तरह, नबियों को अस्वीकार कर रहा है और उन्हें मार रहा है। इसलिए अब वह अपने बेटे, यीशु को भेजने जा रहा है। वह अपने बेटे को भेजता है, और किरायेदार किसान बेटे को देखते हैं और वे कहते हैं, "वाह, यह बेटा है, अगर हम इसे मार देते हैं, तो हम विरासत प्राप्त करेंगे।" इसलिए वे तय करते हैं, "चलो बेटे को मार देते हैं।" इसलिए वे बेटे को मार देते हैं। "फिर पिता क्या करेगा?" सवाल बाद में आता है। तो क्या होता है कि अध्याय 21:43 में यह कहा गया है: "इसलिए, मैं तुमसे कहता हूँ, कि परमेश्वर का राज्य तुमसे छीन लिया जाएगा और ऐसे लोगों को दिया जाएगा जो इसका फल लाएंगे।" यह तुमसे, किरायेदार किसानों से छीन लिया जाएगा, जिन्होंने फल नहीं पैदा किया, इसे मालिक को नहीं दिया, लेकिन यह तुमसे छीन लिया जाएगा और ऐसे लोगों को दिया जाएगा जो इसका फल लाएंगे, यानी अन्यजाति। तो यह फिर से यहूदियों की यह धारणा है कि उन्हें पहला प्रस्ताव दिया गया था, वे इसका

दुरुपयोग करते हैं, और इसलिए अब सुसमाचार अन्यजातियों में फैल रहा है। यह दुष्ट किरायेदारों का दृष्टांत है। वर्णनकर्ता ने नोट किया कि फरीसियों ने समझ लिया कि वह उनके बारे में बात कर रहा था। जाहिर तौर पर उन्हें इससे सुराग मिला।

एल. बारह सिंहासन और गवाह [42:55-47:05]

अब, इस व्यापकता के साथ काम करने वाली कुछ बातें: एक जो दिलचस्प है, वह शिष्यों से कहता है कि वे बारह सिंहासनों पर बैठेंगे। यह मत्ती 19:28 है: "मैं तुमसे सच कहता हूँ कि जब सब कुछ नया हो जाएगा, जब मनुष्य का पुत्र अपनी महिमा के सिंहासन पर बैठेगा।" अब मनुष्य के पुत्र पर ध्यान दें, हम मनुष्य के पुत्र के बारे में अपनी अगली प्रस्तुति में मार्क में उसके बारे में बात करने जा रहे हैं और उस शब्द का क्या अर्थ है। यीशु खुद को मनुष्य का पुत्र कहते हैं। इस तरह यीशु खुद को मनुष्य के पुत्र के रूप में पहचानते हैं। "मनुष्य का पुत्र अपनी महिमा के सिंहासन पर बैठा है, और तुम जो मेरे पीछे आए हो, तुम भी बारह सिंहासनों पर बैठकर इस्राएल के बारह गोत्रों का न्याय करोगे।" तो शिष्य मूल रूप से इस तरह के अभिसरण को देखने जा रहे हैं जहाँ यह इस्राएल के बारह कुलपति नहीं होंगे, यह यहूदा और यूसुफ और बिन्यामीन और नप्ताली और जबूलून नहीं होंगे। यह वे नहीं होंगे जो बैठकर इस्राएल का न्याय करेंगे, यह बारह प्रेरित होंगे। तो आपके पास दो समुदायों का संयोजन है: यहूदी समुदाय और वे समुदाय जिनके शिष्य बारह सिंहासनों पर बैठकर इस्राएल के लोगों का न्याय करेंगे।

और फिर, बस जल्दी से, इस गवाह पर: तो हमने इसके हिब्रू अभिविन्यास के बारे में बात की और हमने दिखाया कि कैसे यह हिब्रू मानसिकता से बाहर निकलकर गैर-यहूदियों को शामिल करने के लिए एक व्यापक दृष्टिकोण में बदल गया। फिर, यहाँ, बस जल्दी से, गवाह है, मैथ्यू की कहानी गवाहों के बारे में है। गवाह के रूप में आने वाले पहले लोग अध्याय 2 में पूर्व से आने वाले जादूगर हैं। यीशु भी बारह लोगों को इस्राएल के भीतर उनके लिए गवाह बनने के लिए भेज रहे हैं। फिर वह उन्हें मत्ती अध्याय 10 में निर्देश देते हैं, बारह लोगों को गवाह बनने के लिए भेजते हैं। फिर यरूशलेम के लिए विलाप, जहाँ यीशु जैतून के

पहाड़ पर आते हैं। आप में से कुछ ने यरूशलेम में खो जाओ कार्यक्रम देखा और आप उस डोमिनस फ्लेविट चर्च में जाते हैं। उनके पास अब जैतून के पहाड़ पर एक चर्च है। आप जैतून के पहाड़ और किद्रोन घाटी से नीचे आते हैं और दूसरी तरफ ऊपर आते हैं और यहीं पर मंदिर का पहाड़ है। तो मंदिर का पहाड़ यहाँ है, जैतून का पहाड़ यहाँ है, और जैसे ही आप पहाड़ से नीचे आते हैं, वहाँ एक चर्च है जो वास्तुकला की दृष्टि से एक आंसू की तरह आकार का है। यहीं पर यीशु ने यरूशलेम के लिए विलाप किया था: "यरूशलेम, यरूशलेम, मैं तुम्हें वैसे ही इकट्ठा करता जैसे एक माँ मुर्गी अपने चूज़ों को इकट्ठा करती है, लेकिन तुमने ऐसा नहीं किया।" फिर यीशु यरूशलेम के लिए रोता है। उसे एहसास होता है कि कुछ ही दिनों में, वे उसे मार डालने वाले हैं। वैसे भी, यह यरूशलेम के लिए विलाप है। फिर से, साक्षी बाहर जा रहे हैं और सुसमाचार फैला रहे हैं। हमने पिछली बार इस पर विचार किया था, मुझे लगता है, जब हम जैतून के प्रवचन के बारे में बात कर रहे थे। आप कैसे जानते हैं कि अंत कब आएगा? अंत तब आएगा जब सुसमाचार दुनिया के छोर तक फैल जाएगा। तो यह संकेतक है। जब सुसमाचार दुनिया के छोर तक फैल जाएगा, तो अंत आ जाएगा। हमने कहा, कुछ विक्लिफ़ बाइबल अनुवादक अभी दुनिया की सभी जनजातियों तक सुसमाचार ले जा रहे हैं, इसलिए यह उस तरह से दिलचस्प है।

अंत में, बेशक, महान आदेश है। महान आदेश सिर्फ़ एक बार और, और यह वह श्लोक है जिसे हर किसी को याद रखना चाहिए। मैं जिस व्यक्ति के साथ काम करता था, उसका थीम गीत महान आदेश था। उसने देखा कि बाइबल में सब कुछ हमेशा इस महान आदेश पर वापस आता है। वह एक बहुत ही सुसमाचार प्रचारक प्रकार का व्यक्ति था, खासकर युवा लोगों के साथ। "इसलिए जाओ और सभी राष्ट्रों के लोगों को चेला बनाओ।" इसलिए हमें शिष्य बनाने वाले बनना है, और यह सभी तरह से किया जा सकता है। "पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा के नाम पर उन्हें बपतिस्मा देना और उन्हें सब कुछ मानना सिखाना जो मैंने तुम्हें आज्ञा दी है, और निश्चित रूप से मैं हमेशा तुम्हारे साथ हूँ।" तो आपको यह इममानुएल अवधारणा मिलती है: ईश्वर हमारे साथ। "मैं हमेशा तुम्हारे साथ हूँ, युग के अंत तक।" तो, किताब इन गवाहों के साथ शुरू होती है। बीच में, अध्याय 10, वह बारह को

इस्राएल के पास भेजता है, और फिर यह उन्हें सभी राष्ट्रों में भेजने के साथ समाप्त होता है, यह अंतिम गवाह है।

एम . मैथ्यू की कहानी—शैली [47:05-49:41]

E: संयुक्त MN; 47:05-53:25; हेर्मेनेयुटिक्स: अतिशयोक्ति

मैं मैथ्यू की शैली के बारे में कुछ बताना चाहता हूँ। लेखन की शैली और चलिए इसे संक्षेप में करते हैं क्योंकि मुझे नहीं लगता कि यह इतना महत्वपूर्ण है। मैथ्यू को दोहराव पसंद है: "मैं तुमसे सच-सच कहता हूँ।" वह अध्याय 5 की आयत 18 में ऐसा कहता है, और यह लगभग 31 बार आता है। "मैं तुमसे सच-सच कहता हूँ।" और "तुमने इसे पुराने समय में कहा हुआ सुना है, लेकिन मैं तुमसे कहता हूँ।" आपको याद होगा कि आपने इसे पहाड़ी उपदेश में कई बार पढ़ा है। "तुमने इसे कहा हुआ सुना है, लेकिन मैं तुमसे कहता हूँ," इस तरह की बातें। तो, मैथ्यू को चीजों को दोहराना पसंद है। इसलिए वह इन रूपों का उपयोग करता है। धन्य हैं वे जो मन में दीन हैं, धन्य हैं वे जो शोक करते हैं, धन्य हैं वे जो हृदय से शुद्ध हैं क्योंकि वे परमेश्वर को देखेंगे, धन्य हैं आप। तो जब आप पहाड़ी उपदेश को देखते हैं, धन्य हैं वे..., धन्य हैं वे..., धन्य हैं वे जो आनंदित हैं। सभी एक पंक्ति में पंक्तिबद्ध हैं, जो हिब्रू शब्द *अश्रे*, ग्रीक शब्द *माकारियोस* के लिए शब्द से शुरू होते हैं। मैथ्यू, क्योंकि वह यहूदी है, समझ जाएगा कि हिब्रू कविता का बहुत सारा भाग समानांतर रूप से लिखा गया है। इसलिए वह बहुत बार कहेगा “स्वर्ग और पृथ्वी,” “व्यवस्था और भविष्यद्वक्ता,” “शास्त्री और फरीसी।” इसलिए वह इन दोहरावों का उपयोग करेगा। “मेरा जूआ सहज है और मेरा बोझ हल्का है।” क्या आप वहाँ समानता देख सकते हैं? “मेरा जूआ सहज है और मेरा बोझ हल्का है।” वह एक ही बात दो बार कह रहा है। यह यहूदी मन को बताने का एक काव्यात्मक तरीका है। यह समानता का विचार है, “मेरा जूआ सहज है और मेरा बोझ हल्का है।”

मैथ्यू आपको यीशु की शिक्षाएँ और ये पाँच महान प्रवचन देता है। हमने पाँच प्रवचन कहा; लोग उन्हें पेंटाटेच या टोरा के समानांतर मानते हैं - उत्पत्ति, निर्गमन, लैव्यव्यवस्था, संख्याएँ, व्यवस्थाविवरण - पहली पाँच पुस्तकें। तो पाँच प्रवचन हैं: पर्वत पर उपदेश, जैतून का प्रवचन, बारह को भेजना, राज्य के दृष्टांत, और मैथ्यू अध्याय 18 में चर्च पर शिक्षाएँ। तो यह सब मैथ्यू की शैली का हिस्सा है। पुराने नियम से चालीस से अधिक उद्धरण हैं। फिर से, यह मैथ्यू की शैली का हिस्सा है और हमने शायद यहूदी संबंध के कारण कहा कि वह यही करता है। शब्दावली के संदर्भ में, वह "फिर" काफ़ी उपयोग करता है, "देखो," और "स्वर्ग का राज्य"। यह मैथ्यू की खासियत है।

एन. व्याख्या—अतिशयोक्ति का अर्थविज्ञान [49:41-53:25]

अब, मैं जो करना चाहता हूँ, वह यह है कि मैं इस बात के बारे में अतिशयोक्ति के साथ बात करना चाहता हूँ। मैथ्यू मुझे लगता है, अतिशयोक्ति का उपयोग करता है। मुझे लगता है कि लोग अतिशयोक्ति की व्याख्या करना नहीं जानते या समझते नहीं हैं। एक अतिशयोक्तिपूर्ण कथन, आप इसकी व्याख्या कैसे करते हैं? मैं आपको बस एक बात बताता हूँ। मैं उसी संस्थान में पढ़ाता था जहाँ यह व्यक्ति था और वे हमेशा कहते थे कि बाइबल में "सभी" का हमेशा मतलब सभी होता है, और यही सब का मतलब है। "सभी का हमेशा मतलब सभी होता है।" अब जब आप कहते हैं कि किसी चीज़ का हमेशा एक ही मतलब होता है, तो मैं आपको बस यह बताना चाहता हूँ, और आपका अंतर्मन आपको बता देना चाहिए, यह सही नहीं है। हम शब्दों का इतने अलग-अलग तरीकों से उपयोग करते हैं, इसलिए एक शब्द का हमेशा एक ही मतलब नहीं होता। "सभी" का हमेशा "सभी" मतलब नहीं होता। तो उदाहरण के लिए, हम बस उस चीज़ का उपयोग भाइयों और बहनों के साथ करते हैं। हम भाइयों और बहनों का उपयोग कैसे करते हैं? ठीक है, आप इसे अपने परिवार में भाइयों और बहनों के रूप में उपयोग करते हैं। फिर आप चर्च जाते हैं और लोग एक-दूसरे को भाइयों और बहनों के रूप में बधाई देते हैं, इसलिए यह स्पष्ट रूप से इस बात के संदर्भ में बहुत अलग है कि आप इसे कैसे समझते हैं। तो मैं यही कह रहा हूँ कि इस धारणा

के प्रति सावधान रहें।

अब अतिशयोक्ति क्या है और यह कैसे काम करता है? मैथ्यू 3:5 में, यह कहा गया है कि "सारा यरूशलेम जॉन बैपटिस्ट को देखने के लिए बाहर गया।" ठीक है, जब यह "सभी" कहता है, तो क्या इसका मतलब है कि यरूशलेम में हर आखिरी व्यक्ति जॉन बैपटिस्ट को देखने के लिए बाहर गया था? जॉन बैपटिस्ट 20-30 मील नीचे, ढलान पर था। फिर आपको वापस ऊपर आना होगा। क्या वास्तव में ऐसा हुआ था, कि "सारा यरूशलेम जॉन बैपटिस्ट को देखने के लिए बाहर गया था"? मैं आपको जो सुझाव देना चाहता हूँ वह यह है: नहीं। वास्तव में, मैं आपको बता दूँ, एक व्यक्ति था जो वहाँ नीचे नहीं गया था। जॉन ने एक ऐसे व्यक्ति के बारे में बताया जो 38 साल से अपंग था और बेथेस्डा के तालाब के पास बैठा था, और यीशु इस आदमी के पास आने वाले थे। और यह आदमी कहने वाला था, "अरे, मैं इतनी तेजी से पानी में नहीं जा सकता" और यीशु कहने वाले थे, "उठो और चलो" और वह आदमी उठकर मंदिर में जाने वाला था। तो वह आदमी 38 साल से अपंग था। ऐसा कोई तरीका नहीं है कि वह जॉन बैपटिस्ट को देखने गया हो और उससे बपतिस्मा लिया हो। इसलिए जब यह कहा जाता है कि पूरा यरूशलेम जॉन बैपटिस्ट को देखने गया था, तो इसका मतलब है कि सभी, उसी तरह जैसे हम कहते हैं "हर कोई बास्केटबॉल खेल देखने गया था।" जब आप कहते हैं कि हर कोई, पूरा गॉर्डन कॉलेज बास्केटबॉल खेल में था, तो यह एक अतिशयोक्ति है, यह एक अतिशयोक्ति है।

मैं बस यह परिभाषित करना चाहता हूँ कि अतिशयोक्ति क्या है। अतिशयोक्ति जोर देने के लिए एक अतिशयोक्ति है। हम हमेशा ऐसा करते हैं। यह एक हास्यास्पद मजाक था। "हम हमेशा ऐसा करते हैं।" मैं वास्तव में हर समय अतिशयोक्ति नहीं करता, इसलिए यह अपने आप में एक अतिशयोक्ति है। इसलिए आपको अतिशयोक्ति से सावधान रहना होगा। मैं यहाँ जो सुझाव देने जा रहा हूँ वह यह है कि यीशु अतिशयोक्ति के साथ सिखाता है। सिर्फ़ "सभी" के संदर्भ में नहीं। अब आपको अतिशयोक्ति से सावधान रहना होगा।

जब पॉल कहते हैं, "सबने पाप किया है और परमेश्वर की महिमा से रहित हैं," जब पॉल कहते हैं, "सबने पाप किया है," तो क्या उनका मतलब हर आखिरी व्यक्ति से है? हाँ।

उस स्थिति में, सबका मतलब सब है। तो, क्या अर्थ निर्धारित करता है? "सब" शब्द का अर्थ क्या निर्धारित करता है? क्या इसका मतलब बिल्कुल सब है, या क्या इसका मतलब है, अतिशयोक्तिपूर्ण अर्थ में, कि अधिकांश लोग वहाँ थे। संदर्भ अर्थ निर्धारित करता है। यह उन चीजों में से एक है जिसे मैं वास्तव में इस पाठ्यक्रम में आगे बढ़ाने की कोशिश करता हूँ। शब्द का क्या अर्थ है? आप संदर्भ से बाहर किसी शब्द को नहीं ले सकते और यह नहीं बता सकते कि इसका क्या अर्थ है। आपको किसी शब्द को उसके संदर्भ में देखना होगा। और इसलिए "सब" का अर्थ कभी-कभी बिना किसी सवाल के बिल्कुल सब होगा। "सबने पाप किया है और परमेश्वर की महिमा से रहित हैं।" अन्य समय में "सारा यहूदिया यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाले के पास गया," यह एक अतिशयोक्ति है, जोर देने के लिए एक अतिशयोक्ति है। इसलिए आपको इसके साथ सावधान रहना होगा।

O. पवित्रशास्त्र को सार्वभौमिक मत बनाओ—अपनी आँख निकाल लो [53:25-56:38]

एफ: ओएस को संयोजित करें; 53:25-70:56; कथनों को सार्वभौमिक न बनाएं

अब मैं इसे थोड़ा और आगे बढ़ाऊंगा। मुझे कभी-कभी चिंता होती है कि लोग पहाड़ी उपदेश लेते हैं और पहाड़ी उपदेश के कथनों को पूर्ण रूप से सत्य मान लेते हैं। वे कहते हैं, "वाह, यह वही है जो यीशु ने पहाड़ी उपदेश में कहा था" और फिर वे पवित्रशास्त्र से उन कथनों को पूर्ण रूप से सत्य मान लेते हैं। यही यीशु ने कहा और फिर पवित्रशास्त्र के बाकी सभी कथनों को रोक दिया जाता है और पृष्ठभूमि में डाल दिया जाता है जबकि इस एक कथन को पूर्ण रूप से सत्य मान लिया जाता है। मैं जो कह रहा हूँ वह यह है कि आप ऐसा नहीं कर सकते। यह बाइबल की व्याख्या करने का एक नाजायज़ तरीका है। आपको पवित्रशास्त्र के हर अंश की व्याख्या पवित्रशास्त्र के दूसरे अंशों के प्रकाश में करनी होगी। आप सिर्फ एक आयत को संदर्भ से बाहर नहीं ले सकते और फिर उसे पूरी बाइबल के लिए अपना थीम गीत नहीं बना सकते। मैं आपको बस एक उदाहरण देता हूँ। मैथ्यू 5:29। यह पहाड़ी उपदेश से है। और मैं आपको जो सुझाव देना चाहता हूँ वह यह है कि इसे पूर्ण रूप

से सत्य नहीं माना जाना चाहिए। मैथ्यू 5:29 जैसे ही मैं इसे पढ़ूँगा आप सभी इसे पहचान लेंगे। "तुमने यह सुना है कि व्यभिचार न करना, लेकिन मैं तुमसे कहता हूँ कि जो कोई किसी स्त्री को वासना की दृष्टि से देखता है, उसने अपने मन में उसके साथ व्यभिचार किया है।" फिर वह यह कहता है, "यदि तुम्हारी दाहिनी आँख तुम्हें पाप करने के लिए उकसाती है, तो उसे निकालकर फेंक दो। तुम्हारे लिए अपने शरीर का एक अंग खोना बेहतर है बजाय इसके कि तुम्हारा पूरा शरीर नरक में फेंक दिया जाए।" इसलिए यदि तुम्हारी आँख तुम्हें पाप करने के लिए उकसाती है, और तुम स्त्रियों को देखने और उनकी वासना करने के लिए उकसाते हो, तो अपनी आँख निकाल दो। मैं जानता हूँ कि तब अधिकांश पुरुषों की एक आँख या उससे कम होगी। तो क्या इसका मतलब यह है कि यह एक पूर्ण कथन है: "अपनी आँख निकाल दो"? "और यदि तुम्हारा दाहिना हाथ तुम्हें पाप करने के लिए उकसाता है, तो उसे काटकर फेंक दो। तुम्हारे लिए अपने शरीर का एक अंग खोना बेहतर है बजाय इसके कि तुम्हारा पूरा शरीर नरक में जाए।" यदि तुम्हारी आँख तुम्हें ठेस पहुँचाती है तो तुम उसे काट दो। यदि तुम्हारा हाथ तुम्हें ठेस पहुँचाता है तो तुम उसे काट दो। तो तुम्हारे सिर के बारे में क्या? तुम्हारा सिर और तुम्हारा दिल तुम्हें प्रभावित करते हैं। तुम क्या करने जा रहे हो अपने दिल को काट दो, और अपना सिर काट दो। दूसरे शब्दों में, इन्हें शाब्दिक रूप से नहीं लिया जाना चाहिए। ये अतिशयोक्तिपूर्ण कथन हैं; ये ज़ोर देने के लिए अतिशयोक्तिपूर्ण कथन हैं। उसका मतलब यह नहीं है कि हम अपनी आँखें निकाल लें। वैसे, अगर आप अपनी आँख निकाल लें, तो क्या आपका सिर अभी भी वासना कर सकता है? हाँ, क्योंकि वासना आँख से कहीं ज़्यादा गहरी होती है। वह बस "आँख निकालने" के ज़रिए इसका महत्व बता रहा है। तो मैं यहाँ जो सुझाव दे रहा हूँ, वह यह है कि यह एक अतिशयोक्तिपूर्ण कथन है, ज़ोर देने के लिए अतिशयोक्तिपूर्ण कथन है। वैसे, शुरुआती चर्च में कुछ लोगों ने वास्तव में अपनी आँखें निकाल ली थीं। उन्होंने वास्तव में ऐसा किया था। मैं जो कह रहा हूँ, वह यह है कि आपको अपने दिमाग का इस्तेमाल करना होगा। आप इसे लेकर सार्वभौमिक नहीं बना सकते। आप पहाड़ी उपदेश से कोई कथन लेकर सभी कथनों को सार्वभौमिक बनाने की कोशिश नहीं कर सकते। आप इसे सार्वभौमिक नहीं बना सकते:

जब आपकी आँख आपको ठेस पहुँचाए तो अपनी आँख निकाल लेना। आपको बहुत सावधान रहना होगा।

P. पवित्रशास्त्र को सार्वभौमिक न बनाएँ—क्रोध और मूर्खता [56:38-59:49]

मैं इसे थोड़ा और आगे बढ़ाऊंगा। यीशु ने कहा, यदि कोई व्यक्ति अपने भाई से नाराज़ है, तो उसने अपने दिल में पहले ही हत्या कर दी है। "तुमने सुना है, हत्या मत करो, लेकिन मैं कहता हूँ जो कोई अपने भाई पर क्रोधित होता है..." तो यह एक बात होगी। तो आपको अपने भाई से नाराज़ नहीं होना चाहिए क्योंकि कैन और एबल की हत्या के पीछे यही ताकत है। लेकिन फिर आप इसके साथ क्या करते हैं? फिर आप इसे पूर्ण करने की कोशिश करते हैं। गुस्सा बुरा है। यीशु ने कहा कि गुस्सा बुरा है। तो, क्या यीशु वाकई कह रहे हैं कि गुस्सा बुरा है? क्या आप इस कथन को सार्वभौमिक बना सकते हैं? आप कहते हैं, "अच्छा, नहीं, यीशु ने यह नहीं कहा कि गुस्सा बुरा है। उन्होंने कहा कि बिना किसी कारण के गुस्सा" और फिर आप इसे थोड़ा सा स्पष्ट करने की कोशिश करते हैं। लेकिन सार्वभौमिक बनाने की यह प्रवृत्ति है। फिर आप मार्क 3:5 में क्या पाते हैं, अंदाज़ा लगाइए? फरीसी चारों ओर हैं और इस आदमी का हाथ सूखा हुआ है। सूखे हाथ वाला यह आदमी यीशु के पास आता है। फरीसी पूछते हैं "क्या तुम सब्त के दिन इस आदमी का हाथ ठीक करोगे?" और इसलिए फरीसी इस बेचारे का इस्तेमाल करके यीशु को फंसाने की कोशिश कर रहे हैं जिसका हाथ सूख गया है। इसमें कहा गया है "यीशु ने उन्हें गुस्से से देखा" क्योंकि वे इस आदमी का इस्तेमाल उसे फंसाने के लिए कर रहे थे, यह देखने के लिए कि वह सब्त का उल्लंघन करेगा या नहीं। यीशु ने कहा, "अगर तुम्हारे पास एक भेड़ है जो गड्ढे में गिर गई है, तो तुम भेड़ को उठा लोगे। तो फिर भेड़ से इंसान कितना बेहतर है? सब्त के दिन भलाई करना सही है।" वह उन्हें फटकारता है, लेकिन इसमें कहा गया है कि उसने "उनकी तरफ गुस्से से देखा।" तो यीशु को खुद गुस्सा था। बाइबल हमें स्पष्ट रूप से बताती है। इसलिए आपको इस तरह के बयानों को सार्वभौमिक बनाने में बहुत सावधान रहना होगा।

यहाँ एक और है। यीशु ने कहा कि किसी को मूर्ख मत कहो। आप सभी प्रकार के छोटे-मोटे भेद कर सकते हैं: "यह इस तरह का मूर्ख नहीं है, यह उस तरह का मूर्ख है" और शब्दों के साथ खेल खेलने की कोशिश करें। लेकिन मुझे लगता है कि आप शब्दों को तोड़-मरोड़ कर पेश कर रहे हैं। यीशु ने कहा "किसी को मूर्ख मत कहो" और मुझे लगता है कि आपको यह समझना होगा, लेकिन फिर भी यीशु खुद क्या कहते हैं? अध्याय 23 में: "शास्त्रियों, फरीसियों, कपटियों, और तुम जो मूर्ख हो, विश्वास करने में धीमे हो।" प्रेरित पौलुस के बारे में क्या जो गलातियों के अध्याय 3:1 में कहता है, वह कहता है, "हे मूर्ख गलातियों।" फिर आप यह कहने की कोशिश करते हैं, "ठीक है, उसने वास्तव में मूर्ख नहीं कहा," और आप इसके लिए सभी प्रकार के बहाने बनाने की कोशिश करते हैं। लेकिन मैं जो कह रहा हूँ वह यह है कि यीशु की बात को न लें, जब उन्होंने कहा - वह लोगों से यह नहीं कह रहे थे कि कोई जादुई सूत्र है कि आपको यह जादुई शब्द नहीं कहना चाहिए, यह एक ऐसा शब्द है जिसका आप लोगों पर उपयोग नहीं कर सकते। आप उनकी बात का मतलब नहीं समझ रहे हैं। पॉल कहेगा, "हे मूर्ख गलातियों" क्योंकि वे जो कर रहे हैं वह गलत है, और वह इस ओर इशारा करता है। यीशु लोगों को देखेगा और उन्हें पाखंडी और अन्य प्रकार के शब्दों से पुकारेगा। वह लोगों को उनके वास्तविक स्वरूप के अनुसार लेबल करता है। इसलिए आपको किसी कथन को संदर्भ से बाहर निकालकर उसे सार्वभौमिक बनाने के बजाय इन बातों को समझने का प्रयास करना चाहिए।

प्र. पवित्रशास्त्र को सार्वभौमिक बनाना—दूसरों का न्याय करना [59:49-62:38]

इस मामले में भी यही बात है। "न्याय न करो, ताकि तुम पर भी न्याय न किया जाए।" मैं कसम खाता हूँ, यह 30 साल पहले हुआ करता था, अगर आप किसी ईसाई व्यक्ति से पूछते थे कि बाइबल में कौन सी मुख्य आयत है जिसे लोग जानते हैं, तो वे कहते थे, "क्योंकि परमेश्वर ने जगत से ऐसा प्रेम किया कि उसने अपना एकलौता पुत्र दे दिया, ताकि जो कोई उस पर विश्वास करे, वह नाश न हो, बल्कि अनन्त जीवन पाए," यूहन्ना 3:16, मुख्य आयत होगी। यहाँ तक कि टिम टेबो भी इसे अब अपनी नज़रों के सामने रखता है। हालाँकि, मैं यह

कहना चाहूँगा कि अगर आप आज लोगों से पूछें कि बाइबल में सबसे प्रसिद्ध आयत कौन सी है? ज़्यादातर लोग कहेंगे, "न्याय न करो, ताकि तुम पर भी न्याय न किया जाए।" अब, क्या इसका मतलब यह है कि हमें किसी का न्याय नहीं करना चाहिए? अगर आप यह कहने की कोशिश करते हैं, "ठीक है, इसका मतलब है कि हमें किसी पर भी न्याय नहीं करना चाहिए।" लेकिन इसके बारे में क्या? 7:15 में क्या है, जब यीशु खुद अपने शिष्यों को झूठे शिक्षकों के बारे में चेतावनी देते हैं? वह उन्हें झूठे शिक्षकों के बारे में चेतावनी देता है, कि उन्हें सच्चे शिक्षकों और झूठे शिक्षकों के बीच न्याय करना होगा। उन्हें वह निर्णय लेना होगा। तो जब आप इस कथन को लेते हैं और कहते हैं, "न्याय न करें, ताकि आप पर न्याय न किया जाए," तो क्या इसका मतलब यह है कि हम सभी को स्वीकार करते हैं, हर कोई अच्छा है? नहीं। यीशु कहते हैं कि वहाँ झूठे शिक्षक हैं और आपको सच्चे और झूठे शिक्षकों के बीच अंतर करना चाहिए।

अब, जाहिर है, आपको इस कथन के साथ सभी समय के अंत में बड़ा निर्णय लेने की आवश्यकता नहीं है। लेकिन आपको इस कथन को लेने के बारे में सावधान रहना होगा, "न्याय न करें, ताकि आप पर भी न्याय न किया जाए," और इसके कथन को सार्वभौमिक बनाना होगा। क्योंकि यीशु स्वयं कहते हैं कि सच्चे और झूठे शिक्षक होते हैं। मत्ती 23 में यीशु स्वयं शास्त्रियों और फरीसियों के पास जाते हैं और कहते हैं, "हे कपटियों।" क्या यीशु निर्णय ले रहे हैं? हाँ, वह उन्हें कपटी कह रहे हैं, और वह उन्हें उनके वास्तविक स्वरूप में लेबल कर रहे हैं। इसलिए सावधान रहें, आप इन कथनों को लेकर उन्हें सार्वभौमिक नहीं बना सकते। "अपने मोती सूअरों के आगे मत फेंको," यीशु ने अध्याय 7:6 में कहा। यह उसी पहाड़ी उपदेश में है, "अपने मोती सूअरों के आगे मत फेंको।" क्या इसका मतलब यह नहीं है कि आपको इस बात पर निर्णय लेना होगा कि कौन सूअर है और कौन सूअर नहीं है? तो मैं जो कह रहा हूँ, आपको इन चीज़ों को पूरी तरह से समझने के बारे में सावधान रहना होगा, अपने दिमाग को बंद कर देना होगा और कहना होगा कि "यह मेरा थीम गीत है: न्याय न करें ताकि आप पर न्याय न किया जाए।" ज़्यादातर समय जब मैंने लोगों को यह कहते सुना है, तो ऐसा तब होता है जब वे कुछ गलत कर रहे होते हैं और कोई उनके झूठ

को उजागर कर देता है। और वे कहते हैं, "न्याय न करें, आपको मुझे जज नहीं करना चाहिए।" वे आपको जज नहीं कर रहे हैं, वे आपकी मदद करने की कोशिश कर रहे हैं, और वे बता रहे हैं कि आपको यहाँ कोई समस्या है।

तो क्या होता है कि हम किसी भाई की समस्या को इंगित नहीं कर सकते। खैर, पॉल ने ऐसा किया। उस आदमी को याद करें जो 1 कुरिन्थियों के अध्याय 5 में था; वह अनाचार कर रहा था। पॉल ने कहा कि उस आदमी को चर्च से बाहर निकाल दो। वह कहता है, "मैंने एक निर्णय लिया है, अब उसे चर्च से बाहर निकाल दो।" इसलिए आपको इन कथनों को पूर्ण रूप से व्यक्त करने के बारे में बहुत सावधान रहना होगा, यह एक वास्तविक समस्या हो सकती है।

आर. पवित्रशास्त्र का सार्वभौमिकीकरण - दूसरा गाल भी फेर दो [62:38-66:08]

अब, यहाँ एक और है। यह मैथ्यू 5:39 से है, "यदि कोई आपके दाहिने गाल पर मारे, तो उसे बायाँ गाल भी दिखा दो।" बुरे व्यक्ति का विरोध मत करो। अच्छा, आप इसे कैसे समझते हैं? मुझे कभी भी किसी बुरे व्यक्ति का विरोध नहीं करना चाहिए, और यदि कोई आपके दाहिने गाल पर मारे, तो उसे बायाँ गाल भी दिखा दो। तो क्या इसका मतलब है-- आप मैथ्यू 5:39 की आयत को कैसे समझते हैं? यह शांतिवादी लोगों के लिए एक बड़ा मुद्दा रहा है, जो कहते हैं कि दूसरा गाल भी दिखा दो। और मैंने हमेशा कहा है कि शांतिवादी लोगों को उनकी रक्षा करने के लिए किसी की आवश्यकता होती है। किसी को बुराई का सामना करना होगा ताकि वे सुरक्षित रहें, ताकि वे दूसरा गाल भी दिखा सकें। लेकिन मैं चाहता हूँ कि आप इस बारे में सोचें। दरअसल, मेरे बेटे ने दूसरे दिन यह मुद्दा उठाया। मान लीजिए कि एक दस वर्षीय बच्चा अपने पिता के पास आता है और दस वर्षीय बच्चा अपने पिता के चेहरे पर थप्पड़ मारता है। पिता एक ईसाई होने के नाते कहता है, "दूसरा गाल भी दिखा दो।" तो पिता बच्चे को ले जाता है और दूसरा गाल आगे कर देता है और बेटा उसके चेहरे पर दूसरी तरफ थप्पड़ मारता है। जब माँ घर आती है, तो आपने उस बच्चे को क्या सिखाया है? ओह, दूसरा गाल आगे कर दो। जाकर माँ के चेहरे पर थप्पड़ मारो, पिताजी ने

कुछ नहीं किया, मैं माँ के चेहरे पर थप्पड़ मारने जा रहा हूँ। तो आपने इस बच्चे को किसी के चेहरे पर थप्पड़ मारना सिखाया है। प्रश्न: क्या आप अपने बच्चों का पालन-पोषण इसी तरह करना चाहते हैं? आपके दिमाग में कुछ चल जाना चाहिए। आपके अंतर्मन में कुछ चल जाना चाहिए, यह कहते हुए कि यह सही नहीं है। एक बच्चा अपने पिता को थप्पड़ मारता है, अनुशासन होना चाहिए। पुराने नियम में कहा गया है कि अगर बच्चा अपने पिता और अपनी माँ का सम्मान नहीं करता है तो उसे पुराने नियम में वास्तव में बड़ी समस्याएँ होंगी। आप उनके चेहरे पर थप्पड़ मारकर ऐसा नहीं कर रहे हैं। तो क्या आप अपने बच्चों को ऐसा करने के लिए प्रशिक्षित कर रहे हैं?

मेरे लिए क्लासिक कहानी है डिट्रिच बोनहोफर की। हमने शिष्यत्व की कीमत और उनके द्वारा लिखी गई महान पुस्तक तथा उनके द्वारा जीए गए जीवन के संदर्भ में उनका पहले भी उल्लेख किया है। डिट्रिच बोनहोफर शांतिवादी थे; दूसरे गाल को आगे कर देने वाले व्यक्ति थे। जब हिटलर ने सत्ता संभाली, तो वे अमेरिका आ गए। वे उस माहौल से बाहर थे; उन्होंने उस माहौल में वापस जाने का विकल्प चुना। वे जर्मनी में उस माहौल में वापस चले गए, भले ही वे शांतिवादी थे। उन्होंने मूल रूप से साजिश रची; वे हिटलर को मारने की साजिश में शामिल थे। मैं जो कह रहा हूँ, वह यह है कि जब उन्हें हिटलर जैसी बुराई का सामना करना पड़ा और लाखों-करोड़ों लोगों की हत्या हुई, तब डिट्रिच बोनहोफर, जो एक "सैद्धांतिक शांतिवादी" थे, ने भी जब उस तरह की बुराई का सामना किया, तो उन्हें एहसास हुआ कि किसी को इस आदमी को रोकना होगा। इसलिए उन्होंने अपने जीवन की कीमत पर मामले को अपने हाथों में ले लिया।

तो, मैं जो कह रहा हूँ, आपको इन कथनों को पूर्ण रूप से व्यक्त करने में बहुत सावधान रहना होगा। आपको कहना होगा, "क्या ऐसे संदर्भ हैं जहाँ यह वास्तव में अनुचित है?" कोई व्यक्ति आता है और मेरी पत्नी या मेरे बच्चों को कुछ नुकसान पहुँचाने वाला होता है और मैं दूसरा गाल आगे कर देता हूँ और फिर वे पीड़ित होते हैं क्योंकि मैं उसके खिलाफ़ खड़ा होने के लिए पर्याप्त पुरुष नहीं हूँ। "पर्याप्त पुरुष" शब्द का उपयोग करने के लिए क्षमा करें, लेकिन मेरा यही मतलब है। तो, दूसरे शब्दों में, मैं एक घर का पिता हूँ और मेरे

अंदर बहुत गहराई से अपने बच्चों और अपने परिवार की रक्षा करना है। तो, दूसरा गाल आगे करना, हाँ, कुछ संदर्भों में मेरा गाल आगे करना उचित है। लेकिन अन्य संदर्भों में, इसका मतलब है कि मैं कायर हूँ। तो मैं जो कह रहा हूँ, वह यह है कि आप इस कथन को लेकर इसे सार्वभौमिक नहीं बना सकते।

एस. दूसरे गाल को समझना [66:08-70:56]

इस साल मेरे टीए ने दूसरे गाल को समझने के मामले में भी कुछ बेहतरीन सुझाव दिए। उन्होंने जो बताया, वह वाकई दिलचस्प है, दूसरा गाल आगे करने की बात सामने आती है... यह "आँख के बदले आँख और दाँत के बदले दाँत" वाली बात व्यवस्थाविवरण में आती है। मैथ्यू अध्याय 19, श्लोक 16 और उसके बाद की आयतों में आँख के बदले आँख, दाँत के बदले दाँत कानून के बारे में बात की गई है। और यह एक दुर्भावनापूर्ण गवाह के संदर्भ में है। दूसरे शब्दों में, यह एक गवाह के बारे में है जो अदालत में जा रहा है और अदालत में झूठ बोल रहा है। यह कह रहा है कि वह गवाह जो भी करता है, उसके साथ वैसा ही किया जाना चाहिए; वह जो भी करवाने की कोशिश कर रहा है, झूठा गवाह जो अदालत में गवाही दे रहा है, किसी और को फंसाने की कोशिश कर रहा है, उस पर किसी चीज़ के लिए मुकदमा चला रहा है जो भी वह उस दूसरे व्यक्ति के साथ करने की कोशिश कर रहा था, उसके साथ वैसा ही किया जाना चाहिए। यह बात सामने आती है, और जो होता है, वह यह है कि यहाँ सुझाव यह है कि वह व्यक्ति, यह कहता है, "जो कोई भी तुम्हारे दाहिने गाल पर थप्पड़ मारे।"

अब जब आप किसी के दाहिने गाल पर थप्पड़ मारते हैं, तो ज़्यादातर लोग दाहिने हाथ के होते हैं, वे किस गाल पर थप्पड़ मारेंगे? वे बाएँ गाल पर थप्पड़ मारेंगे। दाएँ गाल पर थप्पड़ मारने के लिए, क्या व्यक्ति अपने हाथ के पिछले हिस्से का इस्तेमाल करेगा? वे अपने हाथ के पिछले हिस्से का इस्तेमाल करेंगे। यहाँ मुद्दा खुद का बचाव करना नहीं है, मुद्दा अपमान और शर्म का है। इसलिए कोई व्यक्ति किसी व्यक्ति को शर्मिंदा करने के लिए अपने गाल पर थप्पड़ मारता है, और हमारा सम्मान खुद में नहीं बल्कि मसीह में होना

चाहिए। अगर आप विलाप पर जाएँ, तो यह दिलचस्प है। विलाप 3:30, यह गाल पर थप्पड़ मारने के बारे में बात करता है जो अपमान का संकेत है। हमें ईसाई होने के नाते ऐसा नहीं करना चाहिए -- हम अपमान सहेंगे क्योंकि हम ईसाई हैं, जैसे हमारे गुरु ने कष्ट सहें और क्रूस पर मरे, हम ईसाई होने के नाते अपमान सहेंगे। यह इस बारे में बात नहीं कर रहा है कि अपने परिवार का बचाव न करें, अपने देश का बचाव न करें, बचाव न करें -- आप जानते हैं कि आपको इसे सार्वभौमिक बनाने के बारे में सावधान रहना होगा। किस बात के लिए एक समय आने वाला है?

सभोपदेशक 3, प्रसिद्ध अंश, बर्ड्स ने अपने गीत "टर्न, टर्न, टर्न" में इसे प्रसिद्ध किया: "शांति का समय होता है और युद्ध का समय होता है।" मैं जो कह रहा हूँ वह यह है कि आप यीशु के कथन को यूँ ही नहीं ले सकते और कह सकते हैं कि यह वैसा ही होना चाहिए। यह कथन को सार्वभौमिक बनाता है। आप जानते हैं कि आपके पास पवित्रशास्त्र में कथन हैं जो क्या कहते हैं? ईश्वर एक योद्धा है। निर्गमन 15 को देखें। ईश्वर एक योद्धा है। "शांति का समय है, युद्ध का समय है," सभोपदेशक 3।

वैसे, रहस्योद्घाटन की पुस्तक के बारे में क्या? जब यीशु वापस आता है, नम्र और सौम्य शांतिप्रिय यीशु, जब वह वापस आता है, तो क्या होता है? यह आर्मागैडन की लड़ाई है। आर्मागैडन की लड़ाई में, अच्छाई और बुराई के बीच संघर्ष में कौन नेतृत्व कर रहा है? यह यीशु है जो लड़ाई का नेतृत्व कर रहा है। इसलिए आप इन कथनों को सार्वभौमिक नहीं बना सकते। आपको समझना होगा कि इन कथनों को लिया जाना चाहिए - ऐसे समय और स्थान हैं जहाँ इन कथनों को लागू करने की आवश्यकता है। इसलिए ऐसा समय होना चाहिए जहाँ कोई मेरे चेहरे पर थप्पड़ मारे (क्योंकि मैं एक ईसाई हूँ) और मैं दूसरा गाल आगे कर दूँ। इसके लिए एक समय और स्थान होना चाहिए। यह कमजोरी से नहीं है, और यह कायरता से नहीं है। लेकिन यह ताकत से है। मुझे अपने परिवार की रक्षा करने की आवश्यकता है। मुझे कुछ बिंदुओं पर, बुराई के स्तर के आधार पर, डिट्रिच बोनहेफ़र की तरह, जो जर्मनी वापस जाएगा और हिटलर की मौत की साजिश रचेगा, क्योंकि वह बुराई को नष्ट करने की कोशिश कर रहा है। इसलिए मुझे लगता है कि एक समय और एक जगह

होती है, और व्यक्ति को यह पता लगाना होता है, यह एक बहुत ही जटिल बात है। आप सिर्फ एक श्लोक लेकर उसे सभी स्थितियों पर लागू नहीं कर सकते।

तो, फिर से, मैं यहाँ जिस चीज़ पर काम कर रहा हूँ, उसे हेर्मेनेयुटिक्स कहते हैं। हेर्मेनेयुटिक्स वह है कि आप बाइबल की व्याख्या कैसे करते हैं। हेर्मेनेयुटिक्स बाइबल की व्याख्या का अध्ययन है। मैं यहाँ जो सुझाव दे रहा हूँ, वह यह है कि आपको बहुत सावधान रहना होगा, माउंट पर उपदेश में, कि आप ऐसा कथन न लें जो कहता है कि “अगर आपकी आँख आपको ठेस पहुँचाती है, तो उसे निकाल दें,” और कहें, “ठीक है, मुझे अपनी आँख निकाल देनी चाहिए।” यह एक अतिशयोक्तिपूर्ण कथन है; यह ज़ोर देने के लिए एक अतिशयोक्ति है। आपको इन कथनों को लेने और उन्हें सार्वभौमिक बनाने के बारे में वास्तव में सावधान रहना होगा। यही वह मुख्य बिंदु है जिसे मैं इन चीज़ों की व्याख्या के संदर्भ में बताना चाहता था, क्योंकि मुझे लगता है कि उन्हें कई बार संदर्भ से बाहर ले जाया गया है। इसलिए “अपनी आँख निकाल दें” या “दूसरा गाल आगे कर दें” या “न्याय न करें, ताकि आप न्याय न करें” को सार्वभौमिक या निरपेक्ष बनाने के बारे में सावधान रहें। इन सभी चीज़ों को समझना चाहिए। और आपको उनके अर्थ और बारीकियों का पता लगाना होगा, और यह भी कि उन्हें कब लागू किया जाना चाहिए और कब नहीं। तो आपको वास्तव में उस पर काम करना होगा।

मार्क [70:56-74:45]

टी. मरकुस की पुस्तक का परिचय---यीशु प्रभु का एक अद्भुत सेवक

जी: संयुक्त टीवी; 70:56-80:57; मार्क: परिचय और लेखक

मेरा मानना है कि हम मैथ्यू की पुस्तक में यही करना चाहते थे। नहीं, मैं मार्क की पुस्तक पर जाना चाहता हूँ। अब हम मार्क की पुस्तक पर जाना चाहते हैं। हम यहाँ, शुरू में, मार्क के चरित्र का परिचय देना चाहते हैं और एक व्यक्ति के रूप में उसके बारे में बात करना चाहते हैं। मार्क, मैथ्यू की तरह, यीशु मसीह राजा और स्वर्ग के राज्य का राजा होगा, मार्क प्रभु का अद्भुत सेवक होगा। और इसलिए, मार्क में, सेवक विषय बड़ा होने वाला है। इसका

आश्चर्यजनक हिस्सा बहुत बढ़िया है - अद्भुत सेवक। तो आप लोगों को यीशु पर आश्चर्यचकित होते हुए देखेंगे। मार्क की पुस्तक में, यह लोगों के यीशु पर आश्चर्यचकित होने के विचार को उजागर करता है। मार्क 2:22 और उसके बाद कहता है, "लोग उसके उपदेश से चकित थे क्योंकि वह उन्हें अधिकार रखने वाले की तरह सिखाता था, न कि व्यवस्था के शिक्षकों की तरह।" श्लोक 27 तक, "लोग इतने चकित हुए कि उन्होंने एक-दूसरे से पूछा 'यह कौन सी नई शिक्षा है और अधिकार के साथ वह दुष्टात्माओं को आदेश देता है और वे उसकी आज्ञा मानते हैं?'" तो लोग यीशु पर आश्चर्यचकित हैं। तो यह अद्भुत सेवक है।

मेरे लिए दिलचस्प बात यह है कि एक निश्चित बिंदु पर, यीशु लोगों को देखकर आश्चर्यचकित हो जाते हैं। यीशु लोगों को देखकर आश्चर्यचकित हो जाते हैं। अध्याय 6:6 में लिखा है, "वह वहाँ कोई चमत्कार नहीं कर सका, सिवाय कुछ बीमार लोगों पर हाथ रखकर उन्हें ठीक करने के। और वह उनके विश्वास की कमी पर आश्चर्यचकित था।" तो आप यीशु को एक अद्भुत सेवक के रूप में पाते हैं, लेकिन वह खुद उनके विश्वास की कमी पर आश्चर्यचकित है।

अब, मैं पुस्तक के लेखकत्व के बारे में बताना चाहता हूँ, और लेखकत्व की पृष्ठभूमि के बारे में बताना चाहता हूँ और फिर हम आज इस पर काम करेंगे। मार्क किस तरह का व्यक्ति था? और आप कहते हैं, "मैथ्यू एक शिष्य था, वह बारह में से एक था। मैथ्यू एक कर संग्रहकर्ता था।" मैथ्यू या लेवी उसका दूसरा नाम था। मैथ्यू या लेवी एक कर संग्रहकर्ता और बारह प्रेरितों में से एक था। मार्क बिल्कुल भी कर संग्रहकर्ता नहीं है। तो यह कैसे हुआ कि मार्क को एक पुस्तक लिखने का मौका मिला? खैर, सबसे पहले, ऐसा लगता है कि जब शिष्य वहाँ थे, तब वह एक छोटा बच्चा था। चूँकि वह प्रेरित है, तो क्या इससे कोई फर्क पड़ता है कि वह कौन था? आप कहते हैं, "ठीक है, वह व्यक्ति प्रेरित था, हमें वास्तव में इन चीजों के लेखकों के बारे में चिंतित होने की आवश्यकता नहीं है, और वास्तव में लेखकों के नाम इन पुस्तकों पर नहीं हैं, और इसलिए यह पूरी तरह से अप्रासंगिक है।" मैं सुझाव देने की कोशिश नहीं कर रहा हूँ, इससे फर्क पड़ता है कि लेखक कौन है। आप व्यक्ति के बारे में कुछ सीखते हैं कि वह क्या लिखता है। आप उसके बारे में कुछ सीखते हैं कि वह क्या

लिखता है, यह जानने के लिए कि उसे किसने लिखा है। अगर आप डिट्रिच बोनहेफ़र की पृष्ठभूमि जानते हैं, और फिर आपने *कॉस्ट ऑफ़ डिसिपलशिप पुस्तक पढ़ी है*, तो आप जानते हैं कि यह व्यक्ति मुक्त होने के बाद जर्मनी वापस गया था और भाग सकता था। वह जर्मनी वापस गया और उसने जो किया वह किया और फिर अपने विश्वास के लिए मर गया। जब आप इसे पढ़ते हैं और आप डिट्रिच बोनहेफ़र के बारे में जानते हैं, और आप *कॉस्ट ऑफ़ डिसिपलशिप पढ़ते हैं*, और आप जानते हैं कि इस व्यक्ति ने अपना जीवन बलिदान कर दिया। दूसरे शब्दों में, पुस्तक उसके जीवन को बयां करती है। तो मैं जो कहने की कोशिश कर रहा हूँ वह यह है कि लेखक महत्वपूर्ण हैं। तो हाँ, इससे फर्क पड़ता है। लेखक अपने द्वारा लिखे गए पाठ में किस तरह का व्यक्तिगत निशान छोड़ता है? और आप उस व्यक्ति को उस पुस्तक में कैसे देखते हैं जिसे वे लिखते हैं?

यू. लेखकत्व—जॉन मार्क कौन था? [74:45-77:07]

अब, जॉन मार्क उसका नाम था। उसका वास्तविक हिब्रू नाम जॉन है, उसका ग्रीक नाम मार्क है। इसलिए प्रेरितों के काम 12:12 हमें बताता है कि यह नाम जॉन मार्क है। दो अलग-अलग नाम... साइमन पीटर: साइमन उसका यहूदी नाम था, पीटर (इस चट्टान पर) उसका ग्रीक नाम था। इसलिए आपको साइमन पीटर के साथ भी इस तरह की बात मिलती है। उनमें से कई के दो नाम थे, एक ग्रीक में, एक हिब्रू में। आज भी, जब हमारे स्कूलों में बहुत से लोग अंतरराष्ट्रीय स्तर पर अमेरिका आते हैं, तो मेरे पास जो छात्र हैं, उनमें से कई का अपनी संस्कृति में नाम यह है, और वे मेरी कक्षा में आकर खुद को पीटर कहते हैं, लेकिन यह वास्तव में उनका नाम नहीं है। यह एक ऐसा नाम है जिसे उन्होंने अमेरिका में रहते हुए अपनाया है। इसलिए आपको संस्कृतियों के बीच दो नामों के साथ इस तरह की बात मिलती है। जब भी दो संस्कृतियों का आपस में मिलन होता है, तो आपको दोहरे नाम का मुद्दा सामने आता है।

उसके बारे में कुछ बातें: जाहिर है कि प्रेरितों के काम 12 में, यहाँ लिखा है, मैं इसे अभी पढ़ता हूँ, प्रेरितों के काम 12:12। पतरस जेल में है, ईसाई पतरस के लिए प्रार्थना करने

के लिए इकट्ठा हो रहे हैं। ईसाई कहाँ इकट्ठा होते हैं? "वे मार्क के घर पर इकट्ठा होते हैं।" अब यह हमें मार्क के घर के बारे में क्या बताता है? अगर ईसाई वहाँ इकट्ठा हो रहे हैं, तो क्या यह एक बड़ा घर है या छोटा घर? अगर यह एक छोटा घर है, तो वे शायद वहाँ इकट्ठा नहीं होंगे। तो मार्क एक बड़े घर से है, मेरा अनुमान है कि वह एक अमीर परिवार से है। वह यरूशलेम से है। वहाँ अचल संपत्ति बहुत अधिक है, उसके पास यरूशलेम में एक बड़ा घर है। ऐसा लगता है कि यह पास ही है। तो यह आदमी एक अमीर परिवार से है, जिसके पास एक बड़ा घर है। "जब उसे यह बात समझ में आई, तो वह मरियम के घर गया..." तो उसकी माँ का नाम मरियम है, "...जॉन की माँ, जिसे मार्क भी कहा जाता है।" तो मरियम माँ थी। नए नियम में बहुत सारी मरियम हैं और इसलिए यहाँ एक और मरियम है, जॉन मार्क की माँ। जहाँ बहुत से लोग इकट्ठे हुए थे और प्रार्थना कर रहे थे और पतरस ने दरवाज़ा खटखटाया और उन्हें लगा कि यह दरवाजे पर उसका भूत है। यह जॉन मार्क के घर पर है। तो ऐसा लगता है कि जॉन मार्क यरूशलेम में शुरुआती ईसाई चर्च के केंद्र में था। वे उसके घर पर हैं, प्रेरितों के काम 12:12 में पतरस के लिए प्रार्थना कर रहे हैं।

वी. मार्क ने खुद को सुसमाचार में लिखा [77:07-80:57]

कुछ लोग सुझाव देते हैं कि मार्क ने खुद को इस पुस्तक में शामिल किया है। मैं वास्तव में इस सुझाव को मानता हूँ, क्योंकि यह अन्य सुसमाचार लेखकों में नहीं पाया जाता है, और यह युवा व्यक्ति के लिए उपयुक्त है। यह प्रभु के भोज के संदर्भ में है। यीशु अपने शिष्यों को भेजता है और कहता है, "अरे, हम प्रभु का भोज करने जा रहे हैं, हम फसह मनाने जा रहे हैं। इसलिए हमें भोजन करने और फसह की तैयारी करने के लिए एक स्थान की आवश्यकता है। "तो शहर में जाओ," वह कहता है। इसलिए यीशु इसे व्यवस्थित कर रहा है। यह कहता है, "उसने अपने दो शिष्यों को यह कहते हुए भेजा, 'शहर में जाओ और एक आदमी पानी का घड़ा लेकर तुम्हें मिलेगा। उसके पीछे जाओ और जिस घर में वह प्रवेश करता है उसके मालिक से कहो "गुरु ने पूछा 'मेरा अतिथि कक्ष कहाँ है (अतिथि कक्ष पर ध्यान दें) ताकि मैं अपने शिष्यों के साथ फसह खा सकूँ?'" अब, उसके पास क्या है?

बारह शिष्य, और वह खुद, यानी तेरह। "और वह तुम्हें एक बड़ा ऊपरी कमरा दिखाएगा, जो सुसज्जित और तैयार है। वहाँ हमारे लिए तैयारी करो।" कई लोगों का सुझाव है कि यह व्यक्ति, पानी का घड़ा ले जाने वाला यह व्यक्ति, जॉन मार्क है। "और उसके घर जाओ"... इसमें एक ऊपरी कमरा है, और यह बड़ा और सुसज्जित है। इसमें क्या होना चाहिए? यीशु, उनके शिष्य, यानी तेरह। आप देखिए, तेरह और उनका परिवार, तो आप क्या बात कर रहे हैं--बीस से तीस लोग? आप बीस से तीस लोगों को रखते हैं, क्या आपको बीस या तीस लोगों को रखने के लिए एक अच्छे आकार के घर की आवश्यकता है, उन्हें खेलाने और उस तरह की सभी चीज़ों के लिए। तो, वह जॉन मार्क का घर है, संभवतः, अध्याय 14:30 में अपने स्वयं के सुसमाचार में खुद को पानी का घड़ा ले जाने वाले के रूप में प्रस्तुत करते हुए। और फिर हम यहाँ जो सुझाव दे रहे हैं वह यह है कि प्रभु का भोज, फसह का भोजन, जहाँ यीशु शिष्यों के पैर धोने जा रहे हैं। वह रोटी तोड़ने, प्याला पीने और प्रभु का भोज, यूचरिस्ट करने जा रहे हैं। यह जॉन मार्क के घर पर होता है। तो, फिर से, प्रेरितों के साथ निकटता से जुड़ा हुआ है और साथ ही हमें एक व्यक्तिगत स्पर्श देता है।

यहाँ एक और है। यह भी अनुमान है। लेकिन मुझे लगता है कि यह समझ में आता है। फिर से, यह किसी अन्य सुसमाचार में नहीं पाया जाता है, लेकिन यह मार्क की पुस्तक में है और यह उन चीज़ों में से एक होगी जिसे आप अपने जीवन के बाकी हिस्सों में याद रखेंगे। इसलिए, मुझे लगता है कि ऐसा होने की बहुत संभावना है। मार्क एक युवा व्यक्ति है और यहाँ कुछ अन्य बातें भी देता है। मुझे इसे संदर्भ में रखना चाहिए। यह गेथसेमेन का बगीचा है। यीशु जैतून के पहाड़ पर गेथसेमेन के बगीचे में होने जा रहा है। तो क्या होने जा रहा है, जैसे ही भीड़ इकट्ठा होगी, ये गुंडे वहाँ जाएँगे और यीशु को गिरफ्तार करेंगे। सभी शिष्य भाग जाएँगे, और यीशु को छोड़ दिया जाएगा। वह गेथसेमेन के बगीचे में प्रार्थना कर रहा है, और फिर ये लोग आते हैं और वे उसे पकड़ लेंगे और गिरफ्तार कर लेंगे, और उसे मुकदमे के लिए ले जाएँगे। मार्क 14:51-52 में लिखा है, "एक युवक था, जो केवल एक सनी के वस्त्र पहने हुए था, और यीशु के पीछे चल रहा था। और जब उन्होंने उसे पकड़ लिया, तो वह अपना वस्त्र छोड़कर नंगा भाग गया।" तो आपको इस छोटे बच्चे की यह छवि मिलती है, जो

उसका पीछा कर रहा है। उस समय कौन छोटा बच्चा था? जॉन मार्क। वैसे, क्या यह संभव है कि भीड़ पहले जॉन मार्क के घर पर यीशु को पकड़ने के लिए आई हो और फिर वह कहे, "वाह, मुझे इन लोगों का पीछा करना चाहिए।" वह उनके पीछे-पीछे उस जगह गया जहाँ यीशु गेथसेमेन के बगीचे में था। फिर, वे उसे पकड़ लेते हैं, इस छोटे बच्चे को। वे उसके वस्त्र को पकड़ लेते हैं। वह अपने वस्त्र उतारता है और यरूशलेम की सड़कों पर भागता है, घर जाने की कोशिश करता है, और अपना वस्त्र नंगा ही छोड़ देता है। और यह कुछ ऐसा है जिसे आप अपने जीवन भर याद रखेंगे, मुझे लगता है। केवल मार्क ने इसका उल्लेख किया है, जो मुझे सोचने पर मजबूर करता है, कि मुझे आश्चर्य है कि क्या यह जॉन मार्क है, और यह उसके संकेतों में से एक है। इस तरह वह खुद को अपने सुसमाचार में प्रस्तुत करता है। यह समझ में आता है। मैं वास्तव में सोचता हूँ कि यह सटीक है। लेकिन फिर भी, यह अनुमान है।

डब्ल्यू. मार्क, पीटर के सचिव और मित्र [80:57-89:49]

एच: कम्बाइन डब्ल्यू: 80:57-89:49; मार्क, पीटर के सचिव और पुत्र

मार्क के सुसमाचार में एक समस्या यह है कि मार्क एक प्रेरित नहीं था। आरंभिक चर्च में, जब वे पूछते हैं: बाइबल में कौन सी पुस्तकें आती हैं और कौन सी नहीं? हमने पहले भी इस पर विचार किया है, कि कौन सी पुस्तकें प्रामाणिक हैं? वे आमतौर पर एक प्रेरित से जुड़ी होती थीं। इसलिए मैथ्यू एक प्रेरित था, जॉन एक प्रेरित था, पॉल एक प्रेरित था (वह पत्र लिखने जा रहा है), जेम्स यीशु का भाई था, फिर जूड यीशु का भाई था। इन पर थोड़ा सवाल उठाया गया। मार्क के साथ इस बारे में क्या? यह पता चला कि मार्क, जबकि वह एक प्रेरित नहीं था, बहुत पहले प्रेरितों के साथ जुड़ा हुआ था। पापियास, प्रारंभिक चर्च के पिताओं में से एक कहते हैं कि यह, मुझे इसे पढ़ने दें, दूसरी शताब्दी की शुरुआत से, "मार्क, पीटर का दुभाषिया या अनुवादक बन गया, उसने सटीक रूप से लिखा, हालांकि क्रम में नहीं, जो उसने प्रभु द्वारा कही गई या किए गए सब कुछ को याद किया था। क्योंकि उसने न तो प्रभु को सुना था और न ही उसका अनुसरण किया था। लेकिन बाद में उन्होंने कहा, उसने पीटर

का अनुसरण किया, जो प्रभु के वचनों, *लॉजिया का एक व्यवस्थित लेखा बनाने के लिए, आपकी आवश्यकताओं के अनुसार अपने निर्देशों को ढालता* था। और पापियास का यह कथन हमारे लिए युसेबियस में दर्ज है। युसेबियस एक शुरुआती चर्च के पिता थे जो एक इतिहासकार थे। युसेबियस चर्च के शुरुआती इतिहासकार थे, ठीक 325 ईस्वी के आसपास, मुझे लगता है अगर मैं गलत नहीं हूँ। युसेबियस, चर्च के इतिहासकार

वैसे, शास्त्र इसकी पुष्टि करते हैं। यदि आप 1 पतरस 5:13 को देखें, तो मैंने इसे यहाँ लिखा है, इसलिए मैं इसे यहाँ कागज़ से पढ़ता हूँ, इसमें लिखा है: "वह जो बेबीलोन में है, जिसे तुम्हारे साथ चुना गया है, नमस्कार भेजती है और मेरा बेटा मार्क भी।" अब जब वह कहता है, "मेरा बेटा मार्क," यह उसके वास्तविक बेटे के बारे में बात नहीं कर रहा है, यह जॉन मार्क के बारे में बात कर रहा है। पीटर कहाँ है? यह पीटर अपने जीवन के अंत में है। पीटर रोम में है। पीटर को रोम में सूली पर चढ़ाया जाएगा, संभवतः नेरोनियन उत्पीड़न के तहत। नीरो वहाँ सम्राट था। आपको याद होगा, अगर मैं गलत नहीं हूँ, कि नीरो ने रोम के कुछ हिस्सों को जला दिया था जिसे वह फिर से बनाना चाहता था। जैसे ही उसने रोम के कुछ हिस्सों को जला दिया, उसे किसी पर दोष देना पड़ा। यह कुछ इस तरह है - जब भी आपको कोई कार्यकारी व्यक्ति मिलता है, तो ऐसा लगता है कि यह उनकी गलती है। खैर, यह कभी उनकी गलती नहीं होती, वे हर चीज का श्रेय लेते हैं, लेकिन यह किसकी गलती है? उंगलियाँ हमेशा इसी तरह चलती हैं, यह इंगित करते हुए कि यह उनकी गलती थी: पूर्व प्रशासन, सीनेटर और कांग्रेसमैन। यह हमेशा किसी और की गलती होती है। वे बिना किसी बात के दोष लेते हैं। वे हर चीज का श्रेय लेते हैं। कुछ भी अच्छा होता है, वे श्रेय लेते हैं, और अगर वह बुरा होता है, तो वे इसका दोष किसी और पर डालते हैं। तो, आपको यहाँ इस तरह की चीजें देखने को मिलती हैं।

"वह जो बेबीलोन में है, जिसे तुम्हारे साथ चुना गया है, नमस्कार भेजती है और मेरा बेटा मार्क भी।" तो पीटर रोम में है, और वह कहता है मेरा बेटा मार्क। मार्क उसका बेटा है, उसका आध्यात्मिक बेटा। और ध्यान दें कि इसमें कोड शब्द बेबीलोन का उपयोग किया गया है। बेबीलोन में लोग नमस्कार भेजते हैं। बेबीलोन कहाँ है? पीटर रोम में है। रोम में क्या

हो रहा है? नीरो शहर को जला रहा है और फिर वह इसका दोष ईसाइयों पर डालता है। तो वह जो करता है, वह ईसाइयों को एक निश्चित प्रकार के ज्वलनशील पदार्थ में डुबोता है, उन्हें खंभों पर रखता है, और ईसाइयों को जिंदा जला देता है। उसने कहा कि ईसाइयों का जलना रोम को रोशन कर रहा था, क्योंकि नीरो ईसाइयों को जिंदा जला रहा था। यह वास्तव में दुष्टता थी।

अब पीटर को क्रूस पर चढ़ाया जा रहा है। चर्च के इतिहास की अफ़वाह यह है कि जब पीटर को क्रूस पर चढ़ाया जा रहा था, तो उसने क्रूस पर चढ़ाने वाले लोगों से कहा, "मैं यीशु की तरह क्रूस पर चढ़ाए जाने के योग्य नहीं हूँ।" आम तौर पर आपको अपने हाथों और पैरों में कील ठोककर क्रूस पर चढ़ाया जाता है। उसने कहा, "मैं इसके योग्य नहीं हूँ।" इसलिए उन्होंने पीटर को उल्टा क्रूस पर चढ़ाया। मैं इसकी कल्पना नहीं कर सकता। लेकिन वैसे भी, उन्होंने उसे उल्टा क्रूस पर चढ़ाया क्योंकि उसने कहा "मैं अपने प्रभु की तरह मरने के योग्य नहीं हूँ।" अब, दूसरी ओर, पॉल एक रोमन नागरिक था, इसलिए जब पॉल की मृत्यु हुई, तो उन्होंने उसका सिर काट दिया। वे पॉल को क्रूस पर नहीं चढ़ा सकते थे क्योंकि पॉल एक रोमन नागरिक था। इसलिए पॉल का सिर काट दिया गया होगा। जहाँ तक चर्च की बात है, पीटर को उल्टा क्रूस पर चढ़ाया गया। लेकिन वह कहता है, "मैं बेबीलोन में हूँ और मेरा बेटा मार्क नमस्कार भेजता है।" पीटर और मार्क एक साथ रोम में थे। बेबीलोन रोम के लिए एक कोड वर्ड है।

अब यह बाद में महत्वपूर्ण है, जब हम प्रकाशितवाक्य की पुस्तक को देखते हैं और हम फिर से बेबीलोन शब्द देखते हैं। बेबीलोन रोम के लिए कोड शब्द है। आप समझ सकते हैं कि पीटर ने यहाँ मार्क के साथ अपने रिश्ते के संदर्भ में इसका इस्तेमाल किया है। तो यह एक अच्छी बात है। तो पीटर और मार्क करीब हैं। पीटर उसे अपना बेटा कहता है।

अब, यहाँ एक समस्या है। बरनबास, यह पता चला है कि, जॉन मार्क का बड़ा चचेरा भाई है। कुलुस्सियों 4:10 में पॉल कहते हैं, "मेरे साथी कैदी, अरिस्तर्खुस और बरनबास के चचेरे भाई मार्क तुम्हें नमस्कार कहते हैं।" अब, बरनबास कौन है? बरनबास साइप्रस का एक धनी व्यक्ति था, जो पहली मिशनरी यात्रा पर निकला था। बर-ना-बास: बरका अर्थ है

"का बेटा," *नाबास* का अर्थ है "सांतवना।" बरनबास प्रारंभिक चर्च में एक उत्साहवर्धक व्यक्ति है। वह एक धनी व्यक्ति है जो साइप्रस से है। बरनबास और पॉल पहली मिशनरी यात्रा पर एक साथ जाते हैं। बरनबास किसे ले जाना चाहता है? वह अपनी पहली मिशनरी यात्रा पर जॉन मार्क को अपने साथ ले जाना चाहता है। इसलिए प्रेरितों के काम 12:25 में कहा गया है, "जॉन मार्क बरनबास और पॉल के साथ अन्ताकिया जाता है।" अन्ताकिया सीरिया में यरूशलेम के उत्तर में है। अन्ताकिया वह स्थान है जहाँ ईसाइयों को पहली बार ईसाई कहा गया था, और प्रेरित पौलुस की तीन मिशनरी यात्राएँ (पहली मिशनरी यात्रा, दूसरी मिशनरी यात्रा, और तीसरी मिशनरी यात्रा) सीरिया के अन्ताकिया से शुरू होने वाली हैं।

इसलिए वे वहाँ जाते हैं और जॉन मार्क उनके साथ जाता है और यह लिखा है, "जब बरनबास और शाऊल ने अपना मिशन पूरा कर लिया, तो वे अपने साथ जॉन को लेकर यरूशलेम लौट आए, जिसे मार्क भी कहा जाता है।" हाँ, यह अध्याय 13 में है जब वे अपनी पहली मिशनरी यात्रा पर निकले। बरनबास और पॉल को उस मिशनरी यात्रा पर जाने के लिए नियुक्त किया गया, और अध्याय 13:5 में लिखा है, "जब वे, पॉल और बरनबास, सलमीस पहुँचे, तो उन्होंने यहूदी सभाओं में परमेश्वर के वचन की घोषणा की (जैसा कि उनका रिवाज था, वे हमेशा यहूदी सभाओं से शुरू करते थे)। जॉन उनके सहायक के रूप में उनके साथ था।" तो, जॉन मार्क जाहिर तौर पर पहली मिशनरी यात्रा में पॉल और बरनबास के साथ गए थे। वे साइप्रस गए। साइप्रस बरनबास का घर था। फिर वे तुर्की चले गए। वे तुर्की को पार करना चाहते थे। तुर्की वह जगह है जहाँ से पॉल थे: तरसुस।

तो क्या हुआ? समस्या यह है कि जॉन मार्क ने काम छोड़ दिया। पहली मिशनरी यात्रा पर, जॉन मार्क ने काम छोड़ दिया। इसमें कहा गया है, "पथोस से, पॉल और उसके साथी पेरगा और फिर पम्फिलिया गए, जहाँ जॉन ने उन्हें छोड़ दिया और यरूशलेम लौट आया।" अब, पाठ में, उस समय जॉन मार्क के बारे में वास्तव में कुछ भी नकारात्मक नहीं कहा गया है। लेकिन बाद में, हमें पता चलता है कि पॉल और जॉन मार्क के बीच दरार आ गई थी। पॉल ने वास्तव में बरनबास के साथ अपने रिश्ते को तोड़ दिया, वे पहली मिशनरी

यात्रा पर एक साथ थे। दूसरी मिशनरी यात्रा पर, जब वे वापस आते हैं और वे फिर से एंटीओक में होते हैं, और बरनबास कहता है, "अरे, चलो फिर से जॉन मार्क को लेते हैं और फिर से बाहर निकलते हैं। आप पॉल, बरनबास और जॉन मार्क को जानते हैं। चलो वैसे ही चलते हैं जैसे हम तीनों पहले गए थे।" पॉल कहता है, "मेरी लाश पर। मैं उस बच्चे को कहीं नहीं ले जा रहा हूँ।" इसलिए पॉल वास्तव में जॉन मार्क से इतना परेशान है कि बरनबास और पॉल अलग हो गए। पौलुस सीलास को अपनी दूसरी मिशनरी यात्रा पर ले जाता है, और बरनबास यूहन्ना मरकुस को लेकर साइप्रस वापस चला जाता है, जहाँ से बरनबास आया था। तो पौलुस और बरनबास के बीच यह विभाजन है।

अब सोचिए कि पॉल और बरनबास कितने करीब थे। पॉल और बरनबास ने अपनी पहली मिशनरी यात्रा एक साथ की थी, और सारा समय यात्रा में बिताया था। फिर पॉल को पत्थरवाह किया गया और उसे मरा हुआ समझकर छोड़ दिया गया। उसे कितनी बार पीटा गया? बरनबास उस पूरे समय उसके साथ था। यह किसी के साथ मौत के करीब आने जैसा होगा, आप करीब आ जाते हैं। बैंड ऑफ ब्रदर्स आइडिया की तरह। ये लोग वाकई करीब थे। उन्होंने साथ में बहुत सी मुश्किलें देखी हैं। और फिर भी, पॉल और जॉन मार्क के बीच इस संघर्ष के कारण, पॉल दूसरी बार जॉन मार्क को नहीं ले जाएगा। वहाँ एक बड़ी समस्या है और पॉल तब जॉन मार्क को अस्वीकार कर देता है।

X. पौलुस ने मरकुस को क्यों अस्वीकार किया? [89:49-92:34]

I: X- Z का संयोजन; 89:49-1:01:29; मार्क और पॉल संघर्ष और

सुलह

अब, कुछ सुझाव क्या हैं? जॉन मार्क ने क्यों छोड़ा? और फिर, यह पूरी तरह से अटकलें हैं, लेकिन इस पर विचार करना चाहिए। कुछ लोग कहते हैं कि जब वे तुर्की पहुंचे तो जॉन मार्क; इसका मतलब है कि जॉन मार्क यरूशलेम से हैं, जीवन के बारे में उनका दृष्टिकोण बहुत प्रांतीय है। यह पहली बार है जब वे इस तरह घर से दूर हैं। इसलिए कुछ लोग कहते हैं कि जब वे तुर्की पहुंचे तो उन्हें घर की याद आ गई, और उन्होंने कहा, "वाह,

यह बहुत दूर हो गया" और वे घर जाना चाहते थे क्योंकि उन्हें घर की याद आ रही थी। यह संभव है। अन्य लोगों को लगता है कि पॉल के साथ तनाव था। साइप्रस में, बरनबास बड़ा आदमी होगा, क्योंकि बरनबास साइप्रस से था और साइप्रस के अंदरूनी और बाहरी हिस्सों को जानता था। जब वे तुर्की पहुंचे, तो पॉल ने पदभार संभालना शुरू कर दिया और बरनबास, उनके बड़े चचेरे भाई की तरह, पॉल के अधीन आ गए। जब सत्ता का वह बदलाव बरनबास के नेता होने से पॉल के नेता होने में बदल गया, तो यह जॉन मार्क को परेशान कर गया। वह कह रहा था, "मेरे चचेरे भाई को यहाँ नेता होना चाहिए," और फिर पॉल ने पदभार संभाल लिया। इससे पॉल और जॉन मार्क के बीच तनाव की कुछ व्याख्या हो सकती है। अन्य लोगों का सुझाव है कि ऐसा इसलिए हुआ क्योंकि पॉल ने अन्यजातियों को प्रचार करना शुरू कर दिया था, और यह जॉन मार्क की सीमा से परे जा रहा था। इसलिए जॉन मार्क वास्तव में सोचने लगता है, "मैं अन्यजातियों को प्रचार करना बंद कर दूंगा।" इसलिए जब वे ऐसा करना शुरू करते हैं तो वह पीछे हट जाता है। तो, इनमें से कोई भी संभव है, ये तीन संभव हैं: घर की याद आने वाले, पॉल, या अन्यजाति। क्या होता है? पॉल और जॉन मार्क, यह चलता रहता है।

क्या ईश्वरीय लोग एक दूसरे से इतना असहमत हो सकते हैं कि वे अलग हो जाएं? यहाँ आपके पास बरनबास है, जो वास्तव में बहुत अच्छा आदमी है, और पॉल, जो प्रेरित पॉल है, जो नए नियम का एक बड़ा हिस्सा लिखने जा रहा है। जॉन मार्क को लेकर उनके बीच दरार इतनी गहरी थी कि इसने उनकी दोस्ती को तोड़ दिया। वे अलग-अलग रास्ते पर चले गए। पॉल सीलास को ले जाता है, और बरनबास जॉन मार्क को लेकर साइप्रस चला जाता है। पॉल सीलास को लेकर दूसरी मिशनरी यात्रा पर जाता है। जाहिर है, ईश्वरीय लोगों के बीच मतभेद होते हैं। पतरस की पुष्टि 1 पतरस 5:13 में आती है। हमने पहले इस पर गौर किया। पतरस कहता है, "अरे, बेबीलोन के लोग नमस्कार भेजते हैं, जैसा कि मैं और मेरा बेटा मार्क करते हैं।" तो, ऐसा लगता है कि पीटर और मार्क एक-दूसरे से घुल-मिल गए हैं। और फिर, पीटर और मार्क अब रोम में थे। लेकिन पीटर मार्क को जानता होगा क्योंकि वह उसके घर पर रहता था। जब पतरस जेल से बाहर निकलता है और स्वर्गदूत उसे जेल से

मुक्त करता है, तो वह सबसे पहले कहाँ जाता है? वह मार्क के घर जाता है। इसलिए उन्होंने प्रभु का भोज वहीं मनाया होगा। पतरस जॉन मार्क और उस परिवार को जानता होगा जो काफी समय से घर के आसपास रहा होगा। इसलिए, पतरस उसे "मेरा बेटा" कहकर पुष्टि करता है। यह पतरस के जीवन के अंतिम समय में है।

Y. पॉल और मार्क के बीच सुलह [92:34-94:52]

अब, क्या लोग समय के साथ कभी बदलते हैं? क्या लोगों को कभी पछतावा होता है कि उन्होंने जीवन में पहले क्या किया? और आप इनमें से कुछ चीजों के संदर्भ में इसे कैसे समझ सकते हैं? खैर, यहाँ पॉल अपने जीवन के अंत में है। पॉल लिखने जा रहा है, और यह 2 तीमुथियुस 4:11 में है। वह जानता है कि वह मरने वाला है। अब पॉल जानता है कि क्या होने वाला है और वह जानता है कि वह मरने वाला है। जॉन मार्क पर बड़ी दरार के बाद पॉल लिखते हैं, पॉल ने अपने जीवन का अंत इस तरह किया: "क्योंकि देमास ने इस संसार को प्रेम करके मुझे छोड़ दिया है और थिस्सलुनीके को चला गया है। क्रेसेनस गलातिया को चला गया है, और तीतुस दलमतिया को। केवल लूका मेरे साथ है।" क्या आपको लूका याद है? वह लूका का सुसमाचार और प्रेरितों के काम की पुस्तक लिखता है। लूका एक डॉक्टर था। इसलिए पॉल को इतनी बार पीटा गया कि आप कल्पना कर सकते हैं कि उसे ठीक करने के लिए वहाँ एक डॉक्टर का होना अच्छा था। लेकिन वह कहता है, "केवल लूका मेरे साथ है," और फिर वह तीमुथियुस से कहता है - यह 2 तीमुथियुस 4 है। पॉल जानता है कि वह मरने वाला है और वह कहता है, "मरकुस को बुलाओ और उसे अपने साथ ले आओ क्योंकि वह मेरी सेवकाई में मेरे लिए सहायक है।" तो यहाँ पॉल अपने जीवन के अंत में है, यह महसूस करते हुए कि उसके और मरकुस के बीच बहुत बड़ी दरार है। अपने जीवन के अंत में, जब वह मृत्यु का सामना कर रहा है, वह लिखता है "तीमुथियुस, मरकुस को बुलाओ। उसे यहाँ लाओ। वह मेरे और मेरी सेवकाई के लिए लाभदायक है।" तो आप दो लोगों के बीच यह मेल-मिलाप पाते हैं जो पहली मिशनरी यात्रा पर गए थे। और, इतने सालों के बाद, कुछ दशकों बाद, आप यह मेल-मिलाप पाते हैं जहाँ पॉल लगभग 68 ई. में मरने

वाला है। यह वह श्लोक है जिसे हमने अभी पढ़ा, "डेमास के लिए, क्योंकि उसने इस संसार से प्रेम किया..." और कहता है, "केवल लूका मेरे साथ है। मरकुस को बुलाओ और उसे अपने साथ ले आओ क्योंकि वह मेरी सेवकाई में मेरे लिए सहायक है।" यह मेल-मिलाप है।

Z. मेलमिलाप का एक व्यक्तिगत उदाहरण [94:52-101:29]

मैं मार्क के साथ हमारी पहली चर्चा के संदर्भ में यहीं समाप्त करना चाहता हूँ। एक बार की बात है, मैं मिडवेस्ट के एक बहुत ही रूढ़िवादी स्कूल में पढ़ाता था। शानदार जगह, शानदार लोग। मैंने संभवतः एक दशक तक एक अधिकतम सुरक्षा जेल में काम किया। यह मिशिगन सिटी, इंडियाना में था। यह एक अधिकतम सुरक्षा जेल थी, और इसे 1800 के दशक में बनाया गया था, इसे इस तरह बनाया गया था कि इसकी दीवारें 40 फीट ऊँची और लगभग 10 फीट मोटी थीं, जिसमें कांटेदार तार और गार्ड थे। यह एक विशाल जेल थी, अधिकतम सुरक्षा जेल। यह वह जगह है जहाँ सभी बड़े लड़के जाते हैं। हत्या, बलात्कार, सभी बड़े अपराध वहाँ होते थे, आजीवन कारावास की सजा वाले लोग। वहाँ मेरे एक दोस्त के खिलाफ ग्यारह आजीवन कारावास की सजा थी। कुछ लोगों को मौत की सजा सुनाई गई है। यह वह जगह है जहाँ बड़े लड़के थे। मैं वहाँ और वापस यात्रा करता था। मैं दिन में इस कॉलेज में पढ़ाता था, और फिर कई शामों में, सप्ताह में एक या दो बार, हम यात्रा करते थे। इस जेल तक पहुँचने में डेढ़ घंटे का समय लगता था। हम अंदर जाने के लिए सात दरवाज़ों से गुज़रते थे। आप अंदर जाते और जब आखिरी दरवाज़ा आपके पीछे बंद होता, तो आपको पता चलता कि आप जेल में हैं। वहाँ से बाहर निकलने का कोई रास्ता नहीं था। आप अंदर थे। फिर हम पढ़ाने जाते और मैं जेल में बाइबिल अध्ययन, कंप्यूटर और कई तरह की चीज़ें पढ़ाता। फिर, मैं और मेरा यह दोस्त डेढ़ घंटे की यात्रा करके ऊपर जाते और डेढ़ घंटे की यात्रा करके वापस आते। जब आप हर हफ़्ते किसी के साथ कार में यात्रा करते हैं और आप सालों तक ऐसा करते हैं, हर हफ़्ते जाते हैं। जब आप दो बार, दिन में 3 घंटे यात्रा करते हैं, तो आप उस व्यक्ति के साथ कार में होते हैं। उनकी शिक्षाओं और कई तरह की चीज़ों को सुनने के साथ-साथ, आप बहुत करीब आ जाते हैं। यह दोस्त जिसका नाम मैं चार्ली रखूँगा,

मेरा बहुत ही करीबी दोस्त था। वह मेरा सबसे अच्छा दोस्त था। हम साथ में सपने देखते थे, साथ में बातें करते थे, हमारे परिवार एक साथ मिल गए। जब उसके चाचा की मृत्यु हुई, तो उसने वास्तव में मुझसे संपर्क किया और मुझे उसके चाचा के कपड़े पहनने को मिले और मूल रूप से, उन्हें गुडविल में ले जाने के बजाय, उन्होंने हमें दे दिए। हम परिवार का हिस्सा थे।

ऐसा हुआ कि कुछ समय बाद उसने कैपस में कुछ सहपाठियों के साथ कुछ छेड़खानी शुरू कर दी, और मैं उस चर्चा में शामिल था जिसमें वे उसे अनुशासित करने के बारे में बात कर रहे थे। उसे यह स्वीकार करने में कठिनाई हो रही थी। हमारे पास इतना सारा डेटा था, यह वास्तव में स्पष्ट था कि वह कॉलेज के सहपाठियों के साथ ऐसी चीजें कर रहा था जो उसे नहीं करनी चाहिए थी, उन पर प्रहार कर रहा था। इसलिए मुझे उसका दोस्त होना चाहिए था, लेकिन परिणामस्वरूप, मैं कुछ अनुशासनात्मक कार्रवाइयों में शामिल था। उसने मुझसे बात करने से इनकार कर दिया। हम वास्तव में बहुत करीबी, सबसे अच्छे दोस्त थे, और फिर अचानक इस बात पर - उसे अनुशासित किया गया था; उसने इस कॉलेज में अपनी नौकरी खो दी। उसकी तरफ से यह था: "मैं तुमसे फिर कभी बात नहीं करना चाहता।" मुझे याद है कि मैं वॉल-मार्ट में था, वॉल-मार्ट में चल रहा था और उसकी पत्नी मेरी तरफ आ रही थी। वह मुझसे छह इंच की दूरी पर चल रही थी और मेरी तरफ देख भी नहीं रही थी। इसलिए मैंने इस दोस्त को खो दिया। यह एक बड़ी बात थी क्योंकि मैं उससे बहुत प्यार करता था, और वह वास्तव में एक बहुत प्यारा दोस्त था।

लगभग, शायद 15 साल बाद मैंने स्कूल बदल लिया। मैं वेनहम मैसाचुसेट्स में गॉर्डन कॉलेज में पढ़ाने के लिए मैसाचुसेट्स आ गया। मैं फ्रॉस्ट हॉल में अपने कार्यालय में बैठा था, और अचानक एक दिन मुझे एक फ़ोन आया। मैंने सुना, और उसने बस कहा "हाय टेड" और मैं तुरंत पहचान गया कि यह कौन है, क्योंकि मैंने पंद्रह सालों में वह आवाज़ नहीं सुनी थी। मुझे बस याद है, यह आपके भाई की कॉल की तरह है। वह कहता है, "अरे, क्या आप बेनेट सेंटर के बारे में कुछ जानते हैं?" पता चला कि बेनेट सेंटर गॉर्डन कॉलेज में व्यायामशाला है। उसने कहा, "हाँ", और मैंने कहा, "केन, क्या यह आप हैं?" "हाँ।" उसने

कहा, “मैं यहाँ बेनेट सेंटर नामक इस जगह पर हूँ, क्या हम मिल सकते हैं?” मैंने कहा, “हाँ।” और इसलिए मैं अपने कार्यालय से बाहर निकला, बेनेट सेंटर की ओर भागा और वहाँ मेरा अच्छा दोस्त था। वह मेरे पास आया, और सबसे पहले उसने मुझसे कहा “मुझे बहुत खेद है। मुझे बहुत खेद है।” उन्होंने मुझे ऐसा आलिंगन दिया जिसे मैं जीवन भर नहीं भूलूंगा।

क्या आपने कभी लोगों को देखा है कि उनके बीच रिश्ता खत्म हो गया है? ऐसे परिवार जहाँ भाई-बहनों या माता-पिता और बच्चों के बीच तनाव है। यह दशकों से चल रहा है और लोग बात करने में सक्षम नहीं हैं। अचानक, मेरे दोस्त के साथ, हम फिर से एक साथ आ गए, और उसने माफ़ी मांगी, जिसे मैं-- और मैं आज भी उससे प्यार करता हूँ और मैं उसे भाई की तरह मानता हूँ। हम फिर से दोस्त बन गए हैं। यह अद्भुत था। मैं उस दिन बेनेट सेंटर से बाहर गया और अनुमान लगाइए कि पार्किंग में कौन था? हाँ, उसकी पत्नी कार में बाहर थी। मैं कार में कूद गया और हमने शायद आधे घंटे से लेकर एक घंटे तक कार में बात की। यह ऐसा था जैसे बोझ उतर गया हो... लोगों में सुलह हो गई हो।

तो यहाँ जॉन मार्क के साथ क्या है, और मुझे लगता है कि यह महत्वपूर्ण क्यों है - पॉल के जीवन के अंत में, आपके पास यह बच्चा है, जिसने शायद अपने युवा दिनों में कुछ बहुत ही बुरे फैसले लिए थे। इसने पॉल के साथ उसके रिश्ते को तोड़ दिया। यहाँ पॉल अब मौत का सामना कर रहा है, पॉल किससे पूछता है? वह मौत का सामना कर रहा है, वह किससे पूछता है? वह कहता है, "जॉन मार्क को बुलाओ, उसे यहाँ लाओ, वह मेरे मंत्रालय के लिए मेरे लिए लाभदायक है।" अपने जीवन के अंत में, वे दोनों, चाहे वे फिर से एक साथ आए या नहीं, मुझे नहीं पता, लेकिन मार्क रोम में था इसलिए मुझे उम्मीद है कि वे एक साथ आए होंगे। तो यह एक खूबसूरत बात है। वर्षों के तनाव के बाद सुलह, यह अद्भुत है।

तो यह जॉन मार्क और उनके जीवन के इतिहास के बारे में एक तरह का दृष्टिकोण है। वह मार्क के सुसमाचार को लिखने जा रहा है, और जैसा कि पापियास ने कहा, वह मूल रूप से पीटर का व्याख्याकार है। तो जॉन मार्क, इसे दूसरे तरीके से कहें, (यह एक तरह से अशिष्ट है), लेकिन जॉन मार्क पीटर के सुसमाचार को लिखने जा रहा है। इसलिए पीटर जो

कुछ भी जॉन मार्क को बताने जा रहा है, जॉन मार्क उसे लिखने जा रहा है। इसलिए हमें जॉन मार्क से पीटर का एक प्रकार का स्वाद मिलता है।

खैर, चलिए यहीं पर बात खत्म करते हैं। मैं थोड़ा ब्रेक लेना चाहता हूँ और जब हम वापस आएंगे तो हम मार्क की किताब के कुछ मुख्य विषयों पर नज़र डालेंगे।

नाथन वोल्टर्स द्वारा लिखित

बेन बोडेन द्वारा संपादित

रफ द्वारा संपादित टेड हिल्डेब्रांट द्वारा संपादित